

## प्रस्तावना

सम्मेशन की ओर से या सामान्यक्य नमें कामकारों की स्थीनत्य रामिनों में इली हूं अनेत प्रकार की कहानियों प्रस्कुत कर रहा है। अभी तक हमारे बागानीकारों के बागो सेवे से समाज के विकास पर कारीर आगोबना करके समाज-सम्बद्धका हता आवश्यक कामें किया जिसमें एट्टेंट-प्रथान हहा भाषा-मेंगी का एक सामाज्यमानी स्वकार को सब प्रकार के प्राकृतिकी स्थित सोसीस्वासको मुख्य कमने किये प्रयोग सम्भाग जाता रहा क





## . प्रकाशकीय .

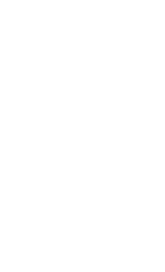
अपूरित सारित्य से नातियों ता यो सत्तवपूरी तथा साम्बुई तर दिली भी बरे ने पाति में लिए लोगे हैं । विकरिया देशों बरे तेन्द्र सिक्षाधिक नातिवादों से अपने दिल आर्थित सित्य का प्रस्तिक प्रतीति दिल हैं भी नाति होता सन्त नाति ने भीच नहीं है । अनुसर-वाद होते ने नाता पुन नामन नातियों ना आदयन बाह्यदन है ।

प्रमुख्य केवागत में प्रचीता नामण में तियों को प्रकास कीन्त्री स्थानिक की नहीं है और यही कहारीकारों को महानी हो गई है हिन्दु बागशेननगर में प्रतिकारित कार्ने का मोजाद प्राप्त हैं। क्यों मार्थन क्षेत्र मोजान कारोगानीय मानाच्या नामकीत्वर कारकवाद ने कार्ने के कार्नेल्य के क्षेत्र प्रतिकार मोजाव्या नामकीत्वर कारकवाद ने कार्नेल्य कार्नेल्य के क्ष्म प्रदा्त की एपी महाया के मान्ये गा मुग्त नामित्यनाया के प्रकार मा बाद कर पहुं हैं। प्राप्त पुरस्का मंग्ने का कार्नेल प्रकारित की महीती हों। कुछ कार्ना है हि मो के विद्यारियों की कार्नावर के प्रशित्त

रदा सर्ह्ह

المعدورات سنبة لمست

والمتراوات والمسر



( : )

```
पूर्व वर्षनापूर्व, विवसपूर्व नदा नापक्षेत्र आहे. मध्ये श्रीनवी में हिसी
मुद्दे और प्रमत्तः मतात्का कोई ऐता विषय नदी वहा दिने कहानिवी में
इस्तर्य न किया ही
इस पुरुष्वे कहानी और निर्देश दो अप्यन्त प्रवत्न आवन्यधाकि साधन
```

वन पुरन कहाना कार पानना दा जायना वक्त कारत्याचार कार्यान वाने बाने बाने हैं और इंडीतिये नवारके सभी रेसो में इन होनो कार्यान प्रभीय नोबन्तियानं केंब्रर जीवधि और स्वारार-नामपोके रिकारन तक में ही रहा है। इनस्वें इनका उच्चित परिसानेन संस्तान अरोधन नमा अनियानं

हैं। मुख्रे यह उल्लेस करते हुए अलाल हुने होता है कि भी अभिनेशवरा उत्तासाय एम० ए०, बीठ टी० ने अलाल अध्यस्तात तथा परिभागे पहेंगे

उत्तारभाग एम॰ ए॰, बी॰ टी॰ ने अध्यन अध्यनकार तथा योष्प्रमाने पहुँचे पहुंच व्यवित्रको अधाना न देकर कमाइतिको वरीवता देकर दम गरू॰ मचयके किये रहानियोग संग्रह अध्यन विश्वेकपूर्ण योक्तिकार के साथ किया है। मुन्के विश्वास है कि छात्र दनका आकर लेये और हिन्दी ममार दनका आहर करेगा।

कारती.

क्वेक्डक्ष ९मी, २००८ (२९ ५.५१) सीवाराम चतुर्वेदी





## कहानी पर दो शब्द

कहानी क्या है। यही पहला प्रस्त है जो कहानी नाम वा नाम हा हमार नामन आता है। पारभाषा अथवा चुठ पहली को अक्कार जो क कहानी वही सम्मा जा सबता। यह भी तभा होने दोन दुद्धिराय हो स्वरूप है जब हम उन पढ़ा भाभा किया एपक ने चहानी को पारमाया क की है—'बहाना पटनाओं का सबद क्या है जो किया पारमाम पर बुचका का है। यह में यह कह की कहानी किया महान् पटना का नांकान करन भाग है। यह घटना संबोद्दर्ध, सामारण ने निम्म और मानव महान व किया महान्य कह पटना संबोद्दर्ध, सामारण नी निम्म और मानव महान व

ş

हम निवने पिस्तार के पास बहने हूं कहानों में नहीं, मा सकते। इस्तियें अच्छी बहानों के लिए पटनाओं की प्रताला बहुत कसी न होनी साहिए। स्वपन साम प्रमान का साम का साम का स्वपन को साम प्रमान का स्वपन के हिम्म प्रितार होने साता सम्बन्ध बहुन स्वान होना चाहिए। ममस की ब्लान कहानी में सिम्लाला वा देती है। कम समस्य में स्वपन कहानों में सिम्लाला वा देती है। कम समस्य में स्वपन कहाना रही कहानों के सर्वागीय मोन्सर्य के सहाने का अवसर प्रदान करती है।

कितने समय की घटनाओं का वर्णन कहानी में लावा जाय--इमके लिए कोई नियम नहीं हो सकता परन्तु दशका ध्यान रखना आवश्यक है कि केवल मृश्य मृख्य घटनाओं का ही वर्णन किया जाय।

कि केवल मुख्य मुख्य पटनाओं का ही वर्षन किया जाय। कहानी का हुदयबादी होना ही उनकी मकलना है। विन ध्येय और मावना में जिस स्थल पर लेवक ने जो कुछ लिया है यदि उनी क्या में पाठक ने उन्हें ब्रह्म न कर पाया तो महानी सफल मही मानी जा सकती। यह

तभी समय है जब प्रत्येक घटना और पात्र का चित्रण स्वामाविक हुआ ही।

ेल्बक बड़ तह अपने को कहानी में घींचन प्रत्येक परिस्थित और पात्र के क्य में गलने में ममने नहीं है नब नक उनकी दिल्ली हों कहानी आकर्तक नहीं हो मनती ।

हरानी का क्यानक (Plot) पहित्र में निरिश्त होना चाहिए।
हुक अंतर बिना पूरा क्यानक समग्र रखे ही जिसना प्रारम कर देने हैं।
परिणाम यह हाता है कि वे अंदे में टटालने हुए चलने हैं और बहुधा

कहानी में पात्र भी जिनने ही कम हो वह उननी ही अच्छी होगी। अधिक पात्रों का समादेस उपन्यास में हो मतना है। उसे लेखक अपनी मुक्सिमनतार उपन्यास की समान्ति के पूर्व ही जहां बाहे छोड़ सबता है।

المنظم والمنطوع المنطوع المنطو وه الله والله والله والمراسعة الله المراسعة ا المراج ال

(बाह्मा बाह्म) उसके तेले केले केले केले कार केले केले केले कार केले केले के कार केले केले के कार केले के कार के ति । बहुत्ती बेबन बहुत्त्वी है केन कहत्त्वी है कि कहा कहा है । कहता है के कहता है के कहता है के कहता है के कहत والمراجع والمراجع المراجع المراجع والمراجع والمر the second of the state of the second of the The state of the s عربية والمحمد 

The state of the s عيمة ويستر من عبد المستر عبد المستر ا कराम कर रेट हैं जो असका और कराम के करा की कर कर की कार की कार की किस की कार की किस की किस की किस की किस की किस असमें कर रेट हैं जो के असका और की किस की की की करण कर देते हैं वहाँ बना हो कर वेले की कर हैं। भर बहुता बहिन है के पत्र बेल हैं के देन के कि कार की A grade of street the training the street of مراد المعادية المراد ا والمراجعة रे केर करने हैं। करने कोर एक पान के करने हैं। इस केर करने हैं। करने कोर एक पान के करने हैं। the day of the of the state of

والمراجع والم والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراج The state of the s

यह दोना मिलने के परचान ही कहानीकार का कार्य भारभ होता है। वह अपन परिश्रम और कीमल के द्वारा उसे एक मौलिक दाने में बालकर

आकर्ष है बना देना है । कहानी लेखक को अपनी स्मरण-पुस्तिका स समय समय पर उठे हुए कहानी के योग्य विचारों को अफिन करने रहना चाहिए । उमें अपने वानावरण का भी अच्छा अध्ययन करने रहेना उपभ-पद होता है। देखने हम सभी लोग हैं। परन्तु यदि एक घट टहरने में पश्चात् कोई हमस पूछे कि मार्ग में हमने क्या क्या देखा और क्या विशय बात पाई तो समबत दा चार मोडी मोडी बातो को छोडकर हम अधिक न बनुष्टा पार्च । कहानी केलक की सर्वेच सजल और संबेच रहने की अवस्थानम् हे । कहानी की सफल्या बहुत कुछ प्रारम पर निर्मेर है । "होनहार विरवान के हान चीवने पान" बाली बहावन यहाँ भी वरिनाय होती है। अन कहानी-कला की ओर भक्षत बाड़ों को कुछ दाना का ध्यान रूपना आवस्थान है। पहिलो बान ना यह है कि बहाती का आरभ स्पष्ट और जारू-

पक शाना चाहिए। कहानी के कुछ बारशिक बाक्या ने हो पदि हुमारे भन का अपनी बार नहीं खोच किया तो उनको सफलता म सब्देह हैं। उसके के मानस-पट पर पूरी बहाती अकित रहती है और बंद उसे किसी भी वकार भारम्भ कर सकता है। वरन्तु उसता यह समभना ठीक नहीं कि उसी के समान पाठक भी आरम्भ करने ही इहानी गम्भने । लेशक ही अपने को पाठक की स्थिति स रमकर समाधने की आवश्यकता है। तभी वह समक पायमा कि वह प्रारम में ही आक्यक केंग बनाई जा सकती है। किसी अतिथि के आन पर उसका प्रमन्न करन के किए, ऊब में बचाने के किए हम पर को सरदर इस स सजान है और सबस अधिक आकर्षक प्रकार द्वार

न्यांते हैं । यादव ही बार्च सामा मानेत हैं हमों के लिए हमारा कहाने विकास है करें बहुता है बहुत है करेंग कर है। की क्रिकेट बस्ते है ांच हुँ हुई हुम्हा बरेचटर बच्छ हुई देखें के हुँ बचे है عمين عيده عربي المعدي المسيد عيرة ويد فيه العيد والعدد أيم الما المالية المالية

÷

हुन्तरी के के कार कारणे हैं। बहुन्तरी की मान कारणा करके المستعرف المراجع المستعرض المس न्तीत्वत बस्त हो मुख्य है । जिल्लाकार प्रतिक को स्थावत को हम रेचेंबर इस रेचेंड रेचेंड के दूर हुए तरते हैं उसे उत्तर बार्टेंड ما المعالمة والمراجع والم والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراج من و المناه المن المعالم المعال को सरकता कर ध्यान हेना हरून जनसङ्ग है। रहते हुन हो बुद्ध होत्व कारों ने अन्तर हो बाद रहतहे भी गहर

है बोर हुए कर में होई रॉन्डॉन डेंड नहीं नकारी ! कर रेंडड की में इन करता चक्का है। एक है मान प्राप्त कराने करती में की केंद्रस्थ वर्षे बहु महत्व किया के प्रवाहत है और भारत की जिल्ला एक किये बहु असे पर बन्ते के राजी में को उत्तर की है। हा हिन राज का साम करार एकन क्तिहरू के एक के कर पाएं ऐसी नहीं कर कि वह बच्चे सहित्य में हैं। दूर बको बाद । हाफरें कर है कि बादे बीटे बबरेंद रोगी कीत हिं है ने सकी बार्ड ने बहनाव हैंच कोबरेंच किया के सहका है बेटबे राई राज है। इतकी किरोत जार है बाद सम्बुर्ट्स कहिन न्दिर कि केंद्र केंद्र राष्ट्र हुँ हैं यह तैया हुए पत्नी के हुए केंद्र 

#### गत्प-सङ्चय

नीनरी बात भाषा में मूहाविशों का प्रयोग है। जैसे काव्य में अन-कारों के दिना मोन्दर्य नहीं लाखा जर मरना बंगे ही कहानी में मूहाविशों के दिना उने रोचेक नरी किया जा महता। उर्दे बोलन बाली की भाषा में मूहाविना की भरमार है। इमीनिये उर्दे की कहावियों बन-अन को अधिक आहर्षिन करानी है। और इमी कोश्या में उर्दे माहिया में मान्यव राहने कोश प्रमानन की भाषा में मूहाविशों का प्रयोग हुम ठीक उमी प्रकार का पाने हैं। हिन्से बालने बानी जनना घर पह तो बोलनी अपनी स्थानीय जाणा में

#### नुहाबियों के प्रयोग की बद्रायें।

भोभी बान कहानी की बारा अवाहिकता है। नहानी नेनक वर नर्नान्य है कि वह बहानी की तिनकर नाये बहाना को। यदि अने भाइन्स में बरकर कहानी में जाने हुए हिमी आपुरुतापूर्व आप पर ही दिख का मुक्तर कि कानना सारम कर दिला तो कहानी में विविच्छा आप नायमी। मुक्तर "हानी की नुज्या हम एक नहीं में दे महते हैं जो निरन्तर कहानी कफी है। यह नहा बहु बहुती कर रही है नभी तक हमका नह दिखेन, दिव मेरिहा और स्वास्प्रदाह है। यदिवानी कर बात कहाने कर ता नामा मिल मर्था पुण देश में मिरदारित हा नोयने। डीक यहि यह बहुनों हो भी है।

बहरतों को परिचार पूच उनहीं गोशका है। येने विस्तर रावतः बहरता ही बहरतीकार से बहरता ही प्रपत्न है। स्पन्न विक्र कार्यों में दिवरतापूर्ण कर होने चाहिया। विक्रांत पाइक प्रदान जाउ उपम बेबाना बड़ों जाव कि —ं बच्चा अने मान को हुना है। मेरे देश ब्राम्यण बच्चा हुना हुने ने ने ने ने हुने जाव। देशों कर हो होते हैं हुने हुन्यों के में मान बहुने हुने हुने कर हुने हुने हुने हुने हुने

कहानी में छड़ी बात जो ध्यान देने की है वह पात्रों की कम रसना हैं। बहुत से टेलक अनेक पात्रों और अनेक स्थानों का नाम कहानी में भर देने हैं। परन्तु ऐसा किसी भी दसा में न होना चाहिए। पाठक धोरे-धीरे पानो और स्वानों में परिचित होता है और एक छोटो मो कहानी में बहुत अधिक पात्र हा देने में न तो तबका चित्रण हो सुन्दर किया जा सकता है न उसका

समुचित विकास हो हो पाता है। राजों में नायक का भी प्रवेग ययासीध होंना चाहिए। अधिक पात्र और स्थल के लोभी लेखक को कहानी की और न आकर उपन्यास को ओर भुकना चाहिचे जिसमें तात्विक रूप में अधिक

अन्तर न होकर योडा हो परिवर्तन ठाना आवस्पक होता है। नहानों में हम अपनी मुविधानुसार को चाहे नहीं लिख सकते। अतः कहानी की एक निस्चित रूपरेखा पहले से बनी रहनी चाहिये। उत्तमें अनगल बातें कभी भी न लानी चाहिये। रसों के नियाह का भी ध्यान रसना आवस्पक हैं। यदि हास्यरच की नहानी है तो करूपापूर्ण वर्णन न लाना ही उत्तम है। चतुर नेतक पात्रों के कपोपक्रपन द्वारा ही अपना उद्देश्य पूरा करता

है। यह स्वयं कुछ नहीं कहता। क्योंपरूपन जितना ही नाटकीय दंग से बस्तुत किया जा तक कहानी उतनी ही आक्रपंक होगी। चहानी का प्रारम किसी घटना से हो तो यह अधिक आकर्षक हो सकती है। पकायक कोई धड़ाका हुआ और वारों और में लोग जमा हो गर्ने।

जीवा, पंछा और समाधान होने पर लोट गर्ने। टीक ऐसी ही पटना ने भारम होने वाली कहानी पाउको को सीच लेगो और उनको विज्ञाता के वत पर उन्हें अपने में व्यस्त स्वती है। रत सब बानों को ध्यान में उसकर कहाती लेखक को आने बड़ता चाहिए।

रम्मु कुछ न्याभाविक बचने भी होतो है जो नेसक को सहायता देने वासी

की है। उसकी अपनी रोजर और जिसका धारा बढ़न भी प्रसित्ती के हान

e

पर भी कहानी को अच्छा बना सकती हैं। इतना अवस्य ब्यान रखना होगा कि कहानी केवल मनोरजन का माधन नहीं है। उसने पाठक को कुछ सीव भी देनी है। परन्तु यदि हमने कहानी में ही शिक्षा देना प्रारम कर दियां ता बहु पाठक को उबाने बाली हो जायगी। अत. इस ध्येय की पूर्ति अदृत्यक्ष

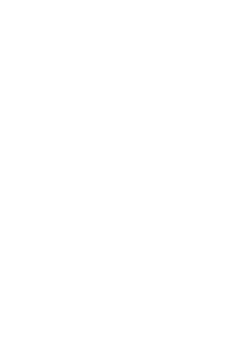
और चातूर्यपूर्ण अय से ही होनी चाहिये। अन्त भी कहानी का ऐसा हो जिसे पढ़कर पाठक के मन में एक अनुध्त

बनी रहे और बहु अधिक बहानी पढ़ने का इच्छुक बनता जाम । कहानी कहने के दग के दिष्टकोण में देनों तो इसे दो रूपो में गना आ सबता है। एक तो प्रथम पुरुष में और दूसरे अन्य पुरुष में। पहिने प्रकार की

कहानी में उन्हों के बीच का कोई पात्र आप बीती मुनाना चलता है। प० मीना-राम जी चतुर्देश की कहाती "में क्स जा रहा हूँ" इसी अणी की है। इसरे प्रकार की कहातियों में लेखक एक तटस्य व्यक्ति के समान दूमरी पर घटने बाली घटनायें देता चलता है। दोतो ही दम सन्दर हैं। चत्र लेगक जिम मार्ग को भी अपनाये कहानी के बताये हुए नियमों को दृष्टिकोण में रखना ह बाउने सजीव और रोचक बना मकता है।

कहानियाँ कितने प्रकार को हो सकती हैं यह बतलाने के लिए पर्यान ममय और स्वान की आवश्यकता है। हमार मामाजिक तथा वैयन्तिक जीवन का उठाने के लिये जितनी बातें आवश्यक हैं उतने ही प्रकार की कहानियों भी हो सकती है । भिन्न भिन्न दक्षित्रकोण रखने के कारण सभी कहानी लेखक निय मार्ग का अनुमरण करने है। कुछ आदर्शवादी हैं उनका विचार हैं कि हमारे मामने एक ऊँचा बाइले हाना बाहिय जिसे दलते हुये हुम उमारी प्राप्ति क रिय जाग वहन स प्रयप्तारोल हो सहँ । श्री वस्तावनलात वर्मी की काराजा इसी प्रकार का है। प्रवासकादी गया समाजन है कि जब गुरू

ममात्र को निर्मा हर दला का प्रयास १४वन प्रमानात्मादक अने में पाटक र सामन न पत्ता जाप अपर ४ तुमार जनपटन शहर उन **दराहर्यों ह**ै।



#### श्रात्माराम

#### धी प्रेमचल

बेडी बाम में महादेव मुनार एक मुविस्थान आदमी पा बहु अपने मायवान में प्रात से सध्या तक अगोठी के सामने बैठा हुआ ह लट किया करता या । वह छपातार ध्वति मनने के लोग इतने अम्पस्त गये थे कि जब किसी कारण में वह बन्द हो जाती तो जान पदता था कि के बीज गायब हो गई है। वह नित्य प्रति एक बार प्रात काल अपने तो

का पित्रका लिये, कोई अजन गाना हुआ नालाब की ओर जाना या । उ र्धुपले प्रकास में जनका अजेर सरीर, पोपला मेंह और भूकी हुई कमर दें। कर किसी अपरिचित मनुष्य का उसके पिशाच होने का भ्रम हो सकता या बयो ही लोगो के काना में आवाज आती--"मत्त गुरुदल शिवदल दाड़ा

लोग समक्त जाते कि भोर हो गया। महादेव का पारिवारिक जीवन मृत्यमय न था। उसके तीन पुत्र थे तीन बहुवें थीं, दर्जनो नाती पोने थे। लेकिन उसके बोम्स को हलका कर-

बाला कोई न था। लड़के कहते जब तक दादा जीते हैं हम जीवन का आतर भीव लं, फिर ता वह दोल गंड पडेगा ही। देवारे महादेव को कभी कर्न निराहार ही रहता पड़ना । भाजन के समय उसके घर में साम्यवाद के एसा मगर भदी निर्पाण होता कि वह भूका ही उठ आता और नारियल व

हुक्का पीता हुआ मा जाना । उसका व्यावसाधिक जोवन और भी अगान्ति . कारक दा। बर्दाप बन्न अपन राम चित्राच वर उसकी सदाई और य बजा न्याना शोजनारन और स्थानी रामार्थनन विद्याद नहीं स्याद बरम्बरूच प्राप्त वर्षाण प्रमान प्राप्त राज्य राज्य और प्राप्त द्वारा बाह्य हो ही नुस्न सुना करना । स्था ही बल्ह-राधन होती अपने तात्र की ओर हप्यवर पुनार उरता—"सम ग्राइन धिवदम याता" इस सन्य ने जपने ही उसके चित्र को पूर्ण सामित भारत हो जाति थी ।

### 1:1

एक दिन सम्मायक्या दिनी लहके न पियंक का द्वार स्थान दिया ।
नाग उह गया। महादव ने का सिर उठावर पियंके की आर देखा का उनका
के क्या स्थान प्राच्या । उतन पिर पियंके की ओर देखा तीता साम्य था।
महादव प्रकारकर उठा और देखर उधर उपने स्थान प्रत्याह दौराने लगा।
पन समार भ काई वरतु प्यारी या चा याँ। ताथा सा । लक्केन्याली, नारी
पीती ने उनका की भर कुका था। स्थानों की कुलमुक से उनके काम म यिका प्रदेश था। ये देश के उनकी की कुलमुक से उनके काम म योग साम्याद्या कु हुआ न इन की का हसीन्य कि उनके कामम यो में सिक्क पर इसीन्य कि उनके कामीं से आर निकार ने अपने पानी भीत देश देश हो। इन इनकी का आयोग यो।

\$3

उड़ा और यहाँ से दूर आम के बाग में एक पेड़ की भूनगी पर जा बैटा। महादेव फिर बाली पिजड़ा लिये मेडक की मौति उनकता हुआ चला। बाग में पहुँचा तो पैर के तुन्त्ओं से आग निकल रही थी, मिर चस्कर शा रहा था। जब जरा सावधान हुआ हो फिर पिजडा उठाकर कहने लगा-"सल गुरुवत जिवबत दाता।" वोता फुनगी मे उतर कर नीचे एक डाल पर बैठ गया. किन्तु महादेव की ओर मधक नेत्रों में ताकता रहा। महादेव पित्रडा छोडकर एक पेट भी आड में हो रहा। तीने में चारो और देखा और फिर आकर पिजर्ड के ऊपर जामन लिया। महादेव का हृदय उछल्वे

लगा। यह धीरे धीरे पिजड़े के नमीप आया और लपका कि तोने को पकड़

लें, किलुतोला हाथ न आया, किर पेड पर जा बैठा। मांक तक यही हाल रहा । तीना कभी द्वधर, कभी उधर उहना, कभी अपने पीने की प्याफी तो कभी भोजन को देखना और उड जाता। बुहुद्रा अगर मृतिमान मोह था, तो तोता मृतिमधी भाषा । जाम हो गई और

भावा भोड़ का सवाम अन्यकार में विलीन हो गया ।

बनो में कहाँ दिया बैठा था। महादेव जानना या कि रान में तीता कही उदहर नहीं जा सकता और न पिजड़े में ही जा सकता है, तिस पर भी वह उस जगह ने हिल्ने का नाम न लेता था। आज उसने दिन भर कुछ नहीं

खाया, रात के भीजन का भी समय निकल गया। पानी तक उसने न सूजा दा। परन्तुआ जन नो उसे भन्न थी और न प्यास । तोते के जिसा उसे अपना बीचन निम्मार शच्य और मना बान पहला था । बहु दिन-रात काम करता था उमरियं कि यह उसकी अन्त धरणायों । यह जीवन के और नाम ने त्या जा, स्वीत गर उपने आदत है। इन जाओं के इन व्योत गर्वका ना त्यामान का बान ने होता था। त्या हो नहें दर है भी जो इन व्याव भवना ना स्थाप दिल्या था। इसना होच्या बहता व्यव ना दर्भर है। इन बाना था।

महार्थित वह का नृत्या ज्यामा जनान्तीय रहे जर कथी कथा भ मेंक्यों के तथा था, किन्तु एका माधित घोडे पर जीव खात जा जार अमेंकिन्त जनकार में जाना जानाज मुनाई जेनालनों मेरा गुरदेश विकटण जाना में

६२१४६ हम प्यान जा गया, य संदर्भात वह बार से विच्छाया--"नार, बार, युर हो ! '- बारा न बाह्य किस्तर भी न देखा ।

महादय दापा के पान नया तो उन एक बन्धनी रंगा हुना निता । रह मीर ह न बा हो रहा था । महादेव बा धुदय उठका ठया । उतन रंगन में हान दाना तो नोहर भी । उतने एक मीहर बाहर निकाल और स्पष्ट के उनाल में करा ही माहर हो भी । उनने तुस्ता बन्धना उठाया रंगद केना दिया जोर पर ब नाव । हमदर में देव रहा । यह साथु में बार बन गया उसे फिर मन्देह हुआ कि कही फिर चोर लौट ल आये और अंकला शास्त्र मुक्की मोहरें छीन में। उनने कुछ मोहरें कमा में बौध की और फिर एक मुची जन्दी ने जमीन की मिट्टी हराकर कई गढ़ढ़े बनामें और उसे मोहर्गे से भरफर मिट्टी में ढक दिया।

#### ( ४ ) महादेव के अन्तः नेत्रों के मामने अब एक दूसरा ही जगन था। जिल्लाबा

और कल्पनाओं में परिपूर्ण । याणि अभी हम सोय के हाथ में निकल जाने ना या या मगर अभिनाताओं ने अपना काम आरस कर दिया था । एक पत्तक्त मकत नव गया, सराके की एक बहिया हुतान सुक गई और निव गर्वाध्यों में किर नाता जुड़ गया। उन किलाम की सामिद्या पूर्णनेत्र थे गई मो वीचे-याथा पर चने और लोटकर वह स्वास्तरेह में यह और बहु अब हुआ। द सके परचात एक गिलानय और एक हुआ कर गया, उद्यान और उनमें कथा पुरान का आयोजन भी हो गया। सामु-नातर भी होने कमा।

उनने परीक्षा करने के जिए कानमा उद्याम और दो वो पग नह बेनहारों माना पदा गया। तान पहना या उनके देशे में पर लग नमें हूं। हिला बानहों वर्षा: हमने लगानों में राठ स्थानेन हो गई। उसा का सायकर हुना, हमा जागी, विश्वपा नाने लगी। बहुता महादेव के नानों में आजा नान

सत्त पृष्टन सिवदन दाना। राम कं चरण में चित्त लागा।" यह बाल सदेव महादव नो किल्ला पर रहना था। दिव में सहस्रो हो

वार प्रवाध निवस सामान्य को जिल्ला पर रहता था। दिन में सहसी है। बारे या पाद उनके समान्य निकरण वा पर उनका थामिक सामान्य उनके अपने. कारण को स्पास न करना वा। अर्था रिमा बार मार्था निकल्पा है, उसी उकार उसके अर्थ में उर्थ रिक्टण वा नियम और प्रवास सुन्य । दब उत्तर हुरपस्ति वृक्ष पत्र पन्तय विदीन या । यह निर्मन बायू उने पुर्वास्ति न बर पत्रको यो । पर अब उत्त वृक्ष में बोरलें और सासाये निरूत वायी यो । इस बायू-प्रवाह ने वह सूत्र उठा, पूंच उठा ।

अस्पीदम का ममन था। अक्षति एक अनुस्तमन प्रकास में दूबी हुई थी। उसी ममन तीता बसी को र्यताने हुए ईसी दाली ने उत्तरा जिसे आकास में की दारा हुई, और आकर सिंबई में उंड परा। महादेव प्रकृत्तित होकर वीहा और सिंबई को उड़ाकर बोला। आओ आल्माराम, तुमने करू तो बहुत दिया, पर मेरा जीवन भी सदल कर दिया। अब तुम्हें बोदी के सिंबई में पूर्ण और तीने ने मंद पूर्णा। उसके रोम पोन में परमाला के पुष्पानु-चार को प्रवाद ती प्रवाद ने प्याद ने प्रवाद ने

"नन पुरस्त शिवरन राजा । गम के बरंग में बिन हाला ।" उनने एक हाथ में पियका हटकामा बंगन में बहुशा श्वास और मर आजा ।

#### [ • ]

महारेड पर पहुंचा तो अभी हुछ अंबेरा था। सन्ते में एक कुले के विवाद और किसी में भेंद नहुई और हुनों को मोहरों में भेंद नहुई होता है उसने करने को एक मान्य में हिए पता और उने केंद्रिने में अपनी नाह अपने कार अपने कार भार भी कार अपने कार कार में वह मोहर पूर्विह को के पर पहुंचा है। उसने कार भी कार मान्य कार मान्

भर दोना भी सबस्मर होगा या नहीं । इस्ट होकर पूछा—"क्या है जी? क्या कहते हो, जानते नहीं कि हम इस बेला पूजा पर रहते हूं ?"

महादेव ने कहा-"महाराज । आज मेरे यहाँ सरवनारायण है कया है।"

पुरोहित जी विस्मित हो गये, कातो पर विश्वास न हुआ । महादव के घर क्या होना उननी असाधारण घटना थी. जिननी अपने घर से किनी भिलारी के लिये कुछ निवासना ।

25

प्रधा—"आत्र बदा है ?"

महादेव बोला---"कुछ नद्दी, ऐसी ही दच्छा हुई कि आज् सगगत्

नीकथासून ∞ृं।"

त्रभात ही से तैयारी होने लगी। वेदों और अन्य निकटवर्नी गावों में

स्पारी फिरी। कथा के उपरान्त भोज का भी स्थोता था। जो सुनड़ा, आरवर्षं करना। यह आज रेन में दब कीने जमी।

मध्या समय जब मत्र लोग जमा हो गये, पण्डित जी अपने सिहासन पर विराजमान हुये, तो महादेव लगा होकर उच्च स्वर में बोला---"भाइयो,

मेरी मारी उमर छल कपट में कट गई। मेने न आने किनने आदमियो को दगा दिया, वितने भरे को मोटा किया, पर अब भगवानने मुफ्रपर दया की

हैं, मेरे मुंड के कालिख को मिटा देना चाहते हैं । मैं सभी भाइयों से नम्रदा-पूर्वक वहना है कि जिसका मेरे जिस्स जो कुछ आता हो, जिसकी जमा मेर मार ही हो, जिसके चोले माल का खाडा कर दिया हो, वह आकर अपनी एक

एक कौडी जुका ले, अगर कोई पहाँ न आ सका हो को आप छोग उससे जाकर कह दीजिये कर मंगक माह तक जब जो भार जाव और अपना हिमाब चत्रता करणा सर्वाही साधी काकाट काम नहां। सब लीस सम्राटे में ब्रागयः। काटमामिक भावसमित दिलाकर कोला—"हम कहनेस

 तिकान्य व्यक्तिव्यस्य क्षेत्रकृति । द्रार्थं के ब्राह्म कृत्या कृत्या । भग व्यक्तिकृति । व्यक्तिवृत्यः

रात प्राप्तात है। इस से त्राहर अपने प्राप्ता कर स्था कर स्था । स्था कर्म अन्य दिल्ली । उन्हें रहनार १ स्था से

विकार पूर्व व्यवस्था त्यार प्रकार प्रकार के भाग का विकास कर कुछ कर के साथ के दिख्या के स्थान के दिख्या के स्थान के स्था

THEO THE LAINING

म राज राजा दिना । र कोर पुरस्कार महार ताल पोर्ट साम कर र स्टान्ड म राज राजा दिना । र कोर पुरस्कार । जिल्लामा र जा पुरस्कार कर र स्टान्ड

कार क्षेत्र हो कार वा वारत के का स्वरंध का हुआ रहते. स्ट्रेंट विकास के का वा वा स्ट्रेंट

र, इन वजुरत कार्य प्रायति । १ और पुर्वालय वर्ष द्रास्त्र राज्यात्

topics are production and are reproductively are reproductively and are reproductively are reproductively and are reproductively and are reproductively are reproductively and are reproductively are reproductively and are reproduc

स्ता की कारण पर राज्या की ती भई ता रिकारिय भागे के पूर्व कि तो कारणी कर्ना के काल की कारण जिल्ला कर बर्ट्स के पूर्व कि तो कि का मार्गित है। उस तो जिल्ला अपने दिस्सक मुक्त भूव है। कि वो को कारणा है के उस तो कारणा कारणी कर बहुत पूर्वा इनके पीठे तीर्थयात्रा करने बला बार्डमा । जाप नव भाइयां से मेरी विनती है कि आप नव भेरा उद्धार करें।" एक माहतक महादेव लेतदारा की राठ देखता रहा। राठ स उमे बोरा

क सन्त में सींद न आंदी। अब बंद कोई काम न करता। धार्म के पहले में एक में में में दिन को आंदी। अब बंद कोई काम न करता। धार्म के पहले में एक हा। बाच क्यालर में हार पर आ बंदी उनका यवारीम सरकार करता। इस हर तक करवा का सुधा के माना। इसे तक स्थित सुधा हो गया और एक बादमी मी अपना दिवाब चुकाने न बाजा। अब महादेव का मान दूंचा मामार में किराना सरकादार है। अब डांस माइया दूंचा कि महादेव दुखा के स्था हो हो अब डांस माइया दूंचा कि महादेव दुखा के स्था के हर्जा कर प्रका है।

इस परना को हुये प्रथम वर्ष बीन चुंक हैं। आप बेरो बाइन ना द्वा हों से मुन्दुश्त करना दिवाद देता है। यह उन्हें हुए का का करना है। उसन मिला हुआ एन परका तालान है सिममें मून क्यान एन उन्हों है। उसने पर्वाद्धा कोई नहीं परकारा। तालान के किनार एक विशास समाध्य है। वहीं अरुवादाम का स्मूर्ण विन्तु है। उनके सब्दाय मंत्रिक्त दिवाद दीवां प्रचलित है। नाई कहा है, उचका स्टब्संट पिता स्वय के चला तथा, कोई कहा है, उचका स्टब्संट प्रवादा होता था। पर दावाब यह है कि यह नाई कहा है, उचका स्टब्संट प्रवाद होता था। यह दावाब यह है कि यह नाई कहा है, उचका स्टब्संट व्याद्धा होता हो। यह दावाब यह है कि यह नाई की पर को निर्मा दिव्यों क्यों राहु न

> "सन गुण्डल सिवदन दाता ! राम के चान में चिन ग्रांस है"

महाराव के विषय में भी विननी ही बन धूरियों हूं। उनम क्षवणे मान्य यह कि आप्ताराय के समाधिया होने के बाद वह चई सम्मान्यि के साथ हिमान्य बारे यह भी बाद बहा से श्रीटका न अर्थ। उनका नाम आप्या-राम प्रतिस्ता हो स्था 11

# ોનટાર્ટ્સ**ા**લા

in the control of the

काक को का चीच्या जाना बाला केंद्रा इन्द्रमा गा है ' क्षा बारत रामा तार उक्तर घर महाम शहरान नगा । इस दश्या की का राज्यात हम का वक दक वक्ष करा विकास रही । जन्म में दानी कर्षी

का बनाकर पदान १९४८ - वो इप मधाने विमोन नुमन दिन्तन में जिले ŧ

A & COST | 41 | 2 of funder a cost & rette fe t'

• १८मी बाचन बना-- इत्ता तृत्वा हेल् हे त्यह है । चेते व त्या ते . इ. को बढ़ वी बार्च रूप व गा। है यह दिखाय है। बग भी बात दहाँ र देश कान काम ने जा गई। दिश कभी उन्हें इन बना भी बान गर

इसर इस्त हा च प्राच्चन हो सर्व पहला र

#### 1+1

£ 4, 2 4.5-

नकर नहें हैं हो है बार देनों ने यह वर होता है है जाव को समावार 

है। कर यह बक्रावर जानक गुलाबर बहु नृत्या व नेता को है । और प्रता कोन्द्रों वर्ष र कर्न्य इत्तर्व अने क्या मिन्द्रा देशा । नदनने को यो न ब्राप्टी 77 (

14 4 14 Fraince And & sances at 1 44 at the est

है। के बाकर क्या हुन्द राजान हो क्वा का सुधी का ÷ è The state of the state of the state of the state of

कोंद्रों है होते कहार एक कार्यों को की कर्म होते । कोई देख करन री हरेड रहे हैं एक नाम मुख्य कर नहीं रहा - रेक्ट की स्ति का उन्ने क

में हिंगों के भी कुमते का रह क्या हुए। कुमता ही हो जिसके राहे कर निर्मा है और । उनने कर ही कर कहा - निर्माह कर भी

رمة عقده ومرقد أربعت فعدد في . रियाना करते रहे तेवस स्कृति एक गाँ । कीरी- बार एक

रिवेदने के हुए हैं हैं हुई है है है है है सा बाई रह वेत स्टार करें के करें। हार्च की बात स्टार हे तहें में मुंबद तिका

विस्तुत्रकारत सर्वेद, को स्टबंध

देशसम्बद्धाः अका सम्बद्धाः व वेते - स्ट्री की किस स्ट्राह

्र विक्ते को देखी करी के देख करी । विक्ते का पूरा एक के देखें दूर क्षेत्र की कुलों हैं के ती होकर पान अहें के अहा तरह के हैं।

हर बन्ते के मूल के गुरू है है कि के ने कि के कि में के कुला के उन में के कुला ! والمعالمة المناطقة ال

ती एक एक को तेन हो। अबने हन्दी अबही हन नहीं तीन बन्दे ति । इदया का बार हो है। बीर है की की राज एक ही नहीं हुई।

the state of the state of the e mang mengeral soleting menger

ेक्या राह भारत बाहुत राजां क्यों में मुक्का दिये। मजनी मन इन्त्र नजे अध्या जा है? या तो अबका देना नाम ब है, तर अप्ता क्याद काम के कार देन किंद बाकिन्यीं मुख्यात की भारत बातन हो का जाता है। पर तान मक्याया गानीन में तर क्यादन की पान

्यत कार्य प्राप्तः वन्तरः त्रमतः दृष्ट क्यादा वस्त नदा है, ज ती कार ता नवार्य प्रा

दा नर्राज्यो क्या "त्या वान "तर महान है नाहर पूर्व गई है नुरुष्य पाद का का क्यों है जुरह में नुरुष्यों काल प्राह्म क्या पान कर की मुर्ग कर देवा क्या है मान्य हरड़, नुरुष्ण प्राप्त प्राप्त पान का मुर्ग के जब द्या ।

न्द्र के र केन्द्री सुन्दे होती है जो बहुत बहुत होते हैं। संकल्प बन देव हैं। जो नेपा पुरस्का बना देव र पहुँ जो ह संकल क्रिका कर्मा कर्मा कर्मा करता है के

प्रकार भारत भारत भारत प्राप्त प्रकार का स्थित है विकास स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप के स स्थाप के स्

....

अस्ता ने ऐते माने बाते हैं बाबू ' .....हीं किर बाजो । अवसी बवस्त ₹₹ तित्र कार्त्ये.....दुवजी हैं ? की स्वा हुवा वे हैं सेने कारन हुए ! तिह हो रचा न हिनाब ? निह रचे देने ! देखी क्वे केंगी बच्छी वेस्हीब बदावाई । जरूज अब को किसी को नदी लेका है ? जब के बुक्ते ? हिंदमी को के एक देवे नहीं है। अच्छा कुम भी पह की। ....अच्छा

स्त पत्तार मुख्योबाता हिए बार्ड बढ़ एस ।

i = ]

अब बर्ज महान में बंधे हुई सेंहियी मुख्येबार्छ की पासी बाउँ पुत्रको गही । अस्य भी उत्तरे अनुभव दिसा है । इस्वी के तस्य हत्ते प्यार ते बाहें करने बाहा हैसे बाहा बहिते क्यों हहीं बाबा--किर वह गौदा थी हेना पत्ना देवरा है और अपनी भी हेना भार कार सहसा है है प्रस्त हो बाद हुँ को बेबारा इन उस्त् नास नाम विस्ता है। येड की कराने नी योग ।

र्को उन्तर मुख्योनको रा अने स्वर विकार हो। हुनसे रही ह

देशी वहा-बच्चों की व्यवनेवाल, दुरशेवाल ! पिहिंची इसे पुरुषकर करते जाती जब ही कर--- निवर होता चौदा है

प्तार ? बहुत दिनों कर विदेशों को पुरस्तिकों का यह केंद्र स्वर और लंको बच्चों के प्रति न्हेंद्रश्चेत बाउँ बाद बाडी ग्हों। नहेंचे के नहीं असे और बने रहें, पर मुख्योंकात न आसा । दिन पीरे पीरे उनकी T == +=-• ]

والمراجع والم والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراجع والمراج

गहप-स\$चय

28

वरकर आजानुविकस्थित केस-रामि मुखा रही था। इसी समय नीहे ही

गली में मुनाई पड़ा---"बच्चा को बहुतानेवाला, मिटाई बाला ।"

मिठाईबाल का स्वर परिचित्र था. अट से रोहियो नीचे उत्तर बाँकी इस समय उसके पनि मकान म त थ । हो उगकी बुदा दादी थी । सहिमी उनके निकट आकर बोजी-"दाशी चुन्नू मुन्नू के लिये मिटाई लेनी हैं।

करा कमरे में बलकर ठतुराओ तो। में उभर केंगे बार्ज, कोई माना न ही। जरा हटकर में भी चिक्त की आड में बंदी रहगी।

दादी उठकर कमरे में आकर बोली—"ए मिटाई वाले ! इघर आनी मिठाईबाला निकट भागया । बोला—"मौ, कितनी मिठाई दूं ? नई उप की मिठाइमी है, रन विरगी, कुछ कुछ लड़ी, कुछ कुछ मीठी और जाउँके दार। बडी देर तक मुंह में टिक्ती है। जल्दी नहीं मूलती। बच्चे वी

चाव से खाते हैं। इन गुणों के मित्रा ये खीसी की भी दूर करती है। हैं कितनी दूं? चपटी, गोल और पहलदार गोलिया है। पैसे की सीलट

देता है ।" दादी बोली--"सोलह तो बहुत कम होती है। भला पन्तीस ने

मिठाईवाला-"नही दादी अधिक नहीं दे सकता। इतनी भी कैसे देता हूँ यह अब में आपको क्या । स्तर, से अधिक तो न

सक्या ।" रोहिणो दादी के पाम ही बैठी थी। बोली--"दादी, फिर भी काफी सस्ती दे रहा है। चार वैसे की ले लो। ये वैसे रहे।"

मिठाईवाला मिठाइयां चिनने लगा । "नो बार पैसे की दे दो । पचीम न सही बीस ही दो । अरे हाँ! में

बुढ़ी हुई, मोल भाव ना अब मुक्त ज्यादा करना भी नही आता।" कहते हुए दादी के पापल मह की जरानी मस्कराहट भी फट निक्लों।

उनकी अठलेलियों से घर में को ठाहुक मना रहता था। समय की गरिन्न विधाना की लीला ! अब कोई नहीं है । दादी, प्राप निकारे नहीं निकरिं। इसीलिये उन्ही बच्चो की लोज में निश्ला हैं । वे सत्र अन्त में होगे तो यहीं

वही। बालिर नहीं न वहीं तो जन्में ही होने। उस तरह रहना नी पुर धुलरर मरना । इस नरह सूख-एलोप के साथ महाँगा । इस तगह के जीवन में कभी-तभी अपने उन बच्चों की एक भाजक सी मिठ जाती है

ऐसा जान पडता है, जैसे वे इन्हीं में उछल बुदकर हम खेर रहे हैं। पैने की कभी थोड़े ही हैं। आपकी दया से पैसे तो काफी है। जो नहीं है, इस तरह उमी

को पाजाता है। रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा। देखा-- उसकी असि अमिओं से तर हैं।

इसी समय चुनु मुखु आ गये। रोहिणी में लिपटकर उसका अवल पंरड-

कर बोके---"अम्मा मिठाई ।"

"मुभने को"--कह कर तत्काल कागज की दो पुडियो में मिटाइय भरकर मिडाईवाले ने चुन्न मुन्न को दे दी।

रोहिणी ने भीतर से पैसे फॅक दिये।

मिठाई बारे ने पेटी उठाई और बहा-- 'अब इस बार ये पैंग न रहुंगा !"

वादी बोली-अरे-अरे, न-न, अपने पैमे लिये जा माई।"

किन्द तब तक आगे सुनाई पडा, उसी प्रकार मादक मुद्रुल स्वर में-"बच्चों को बहलानेशाला मिठाईवाला।"



सेठ छगामल कुछ अप्रसन्न हो कर बोर्ल-"मेरी दश: इन आर्थानों से कभी नहीं मुपर सकती। ये आशावें और विश्वाम मुक्ते मौत के

पत्र से गहीं घुटा सनते।"
मुगीम जी हुछ बहुने की ये, परन्तु मेठ ने उन्हें हाम के इमारे में सेठ कर बहा—"मुगीम जी, आग मुग्ते बहुजाने की चेटा मन कीनिये। अब लोकाचार का समय नहीं रहा। मेने आपको जिम काम के निये

बुलाया है उसे मुनिये और समिश्रये।"

मुनीम जी—"मुक्ते जो जाजा हो वह से सदैव करने के लिए—" तह जी—"इतके पहले की कीई आवस्यकना नहीं। आगको मेरे यहां रहते हुए २० वर्ष हो एसे हैं। इनने दिलों में मुक्ते आपके विषय में पूरी जानकारी हानिक हो चुकी हैं। मुक्ते जिनना विस्तास आर पर है, जनना चुनी पर भी नहीं।"

मुनीम ओ---"यह सब आपकी हपा---"

सेठ जी—"इपा नहीं, सक्की बात है। अच्छा जरा चुन्नू की युज-

बादमें।"

मुनीमजी उठकर बाहर गये और १० मिनट बाद लीटे। उनके बाय एक नजपुत्रक था, जिसकी आयु प्रकास छन्दीस वर्ष के समजप भी। मुनीम जी तथा नवपुत्रक दोनों मेठ जी के पर्लेग के पास बैठ गये।

सेठ जी जुछ देर आंख बद जिये पडे रहे। तत्परचान् आंखें सील कर बोल--'बेटा चन्न'

नवयुवक— हो 'पिनाबी ' "

सर बी--- में ता अब दो ही चार दिन का मेहमान है।" मनीम बी--- आप भी को बात किया करने हैं। आप अवस्य अच्छ हो जायन। कह राक्टर माहन कहने हैं कि अभी कोई बीत नहीं स्तिही। साम यो ही ऐसी बाउँ मोच सोच नय तबियत परेमान किया चरने हैं।"

बुहू-"यह साम बना-"

मेंठ थी हाय के इसारे से पुत्र को रोक कर दोने--- 'पहिले मेरी सब बारों मुन को, फिर थी थी काहे कह लेता। हों, तो यदि में करा ही बसा तो अपने पीटे मुनहारे लिए अपने क्यान पर मुनीम थी को छोडता हूँ।"

चुत्रमतः ने बुद्ध चौर कर मृतीम जी की ओर देया। मृतीम जी भी हुद्ध पक्स से गरे।

नेट दी--- 'दो देतन इन्हें बद दिया जाता है, यह सदैव सिये जाता ---पाहे में काम करें मान करें। यब कोई बड़ा काम करना दो तुम्हारा कमन्य हुआ न हो तो पहिले मुनीमबी से सलाह ले लेता और देना यह करें बैना ही करना।'

चुमूमत असिं छाड पाड कर मुनीम जी की ओर देसते बाते प और पिता की की बातें मुन रहे से । मुनीम जी चुरवार निर मुकाने बैंडे से ।

मेठ जो बुछ देर दम लेकर बोले---'बम तुम्हारे किए मेरी यह अंतिम साम है। मुख्ये और दिश्वी सम्बन्ध में बुछ नहीं बहना है। तुम स्वयं समम्बारहों; जो जबित समस्ता करना।"

मेंट जो में किए कुछ देर दम तिया। तत्तरजात् बोले—'मुनीम खो ! जरामे मुम्हे कुछ नहीं कहना। मुम्हे विश्वाम है कि जो ध्यवशार जान मेरे नाम करते रहें इसके साम भी करेंगे। कारम, जान इसे सर्देव ही पुत्रवत् सममते रहे हैं।"

मुनीम वी ने सेठ वी की बात का कोई उत्तर न दिया। सेटबी ने मुनीमजी की बोर देखा। वृद्ध मुनीम की जीमों में ब्रांस्थी की छोड़ी छोड़ें बुदे निक्छ का उनके मुनियां उहें हुए गानी पर वह रही थी। बान पहला ह मेंटबी का उन बुदों के क्षणा अपना बाल का उनके मिन नवा क्यांकि उन्होते दुछ प्रयक्त मृत्य होकर दूसरी ओर करके: बदल की।

#### [ + ]

केड में बा ब्यावमा पूर्ण नित्त महिने बीत गये। मेड बहुमण करते । तात करवाय पूर्ण होते के बारण गारे मारेश्वर के महिन्द हूए । हुई कृतिम मन्यवन नित्त बार कर कर हरा। तात कर है थे, उसी आहा हरा थे, है कि महिन बार कर स्थान कर स्थान है है कि महिन की पूर्ण की है के स्थान कर है अपने मारेश कर स्थान है कि स्थान की स्थान कर है कि स्थान की स्थान कर है कि स्थान स्थान स्थान है कि स्थान है कि स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान है कि स्थान स्थान

गाँक दिव भूपांच व बार मुळ विवाद के साथ वाहर सुबंद को वे ही समय भे जा दिया राम जा राम हात्र को क्षेत्रीय है बहा-व्यक्ति समय भाव बारण करते दिन सी है जाति के जात्र की होते कहा है। वह बाय दुंड हात्रा हो जब चंद्र नहीं है जो के बहु के बहु है के बहु है के बाद बाय दिन का जा रूप वर्ष है जो राम के जात्रा इनका बहु बाद बोले होती. ্সাধ্যয়ন ধৰি মুট্টিগ্ৰান্ত হ'ব হ'ব। তেওঁ প্ৰতি ধৰি ভাইবিল চিত্ৰা কৰবাৰুত গোলিক হ'ব উল্লেখ্য হ'ব সহাহ চিত্ৰায় সমাহত

्युर्वेषा २५८ - १८८ ४ व् ह्रा संग्रीतिक कारास व्यवसार नोक्या कर त्या राज्य हे ५९४ च कर्ट संत्रात्र सरी कर रावण हार्यंत्र सर्वे सरी त्या तथा १८८ व्हर अस्सार व्यक्ति च स्वस्थात वर्षा व्यवहार है

क्षापा - गर वं नार्व । में स्मारिक क्षाप्त का व्यव क्षाप्त कर

না বুলিকালে আন্তৰ্ভ লৈ লাভিত্ৰ আন্তৰ্ভাৱ ভালিক বুলো নামৰ মহালিক মাহল ৰামৰ সাম্প্ৰতি দুছি লৈ বিচাৰ বিলাগ বহু সভাৰ বুলোক এ আবহুল কো আবহুল মাহল মাহল কা

পৰা প্ৰতি প্ৰদেশ প্ৰাৰ্থ প্ৰাৰ্থ হ'ব। - স্বাহাণ হৃত্য প্ৰাৰ্থ সংগ্ৰহণ হ'ব প্ৰাৰ্থ বা সাহ প্ৰাৰ্থ হয়। বাহ

र मंग कोण है। राद्या । - एक्के देश देशका से साराज होते पर राग्य की बुधुमण ने कहा——

मार्थ में पर देश स्टाप्ट तुन्न शाह के साम सहा बल सक्का है

एक दिला की गा—'नेकी है

े भुगुगा— वृत्तीम श्री का ११ — दग समय काम अधिक है, महा एमा दल्क नहां ही

इत्या- अति तुम उत्त बुन्ध स्थाप की बाध म आ गर्द ?"
मुद्र- बना बक्त अधित कुन बजना है ता वे अध्यक्ष होते हु।"

प्रिया— अपनेप राज पता है भारतीय है। यह र कीन र मीहर की परिया— अपनेप राज पता होने दी। यह र कीन र मीहर की परिराधा है।

40 4 4

्रकार चार्च का चार्च का राज्य का क्यां क्या स्थाप

P + 1 + 1 + 24 4

दूमरा—"शत सच्चीतो यह है कि कहने को तो सुम स्वउत ही त्ये। पर अब भी उनने ही परनन्त्र हो जितने बडे सेठ जी के समय में थे। तुम कुछ बबुबा तो हो नहीं, जो अपना बनना बिगडना न समभी।"

तीमरा—"अरे मार युद्दा बड़ा चलता पुरता है। वह चाहता है कि तुम उगकी मुद्दी में रहो; जिनना पानी पिलाये उनना ही पियो ।"

पहिला-"गवभून तुम्हारे लिए यह बडी लज्जा नी बात है।"

इस प्रकार सबने मिल कर चुनुमल को ऐसा वंग पर चढ़ाया हि उन्होंने यह टान ली कि चाहें जो कुछ हो परन्तू अब मुनीम जी के सामन में न रहेंगा ।

दूसरे दिन चुत्रुमल सर्वेरे मित्रो के साथ जाने भी तैयारी करने लगे। मनीम जी की जब पना लगा सी बडे कृष्टित हुए और चन्न से बोले--"ब्रास्तिर आपने मेरा बढ़ा न माना और जाने की तैयारी कर ही दी।"

चुनुमल एक तो स्वय ही मुनीमत्री में तम आ गये थे, दूसरे मित्रों ने भी उन्हें मूच भरा था। वह मुनीम भी का निरम्तार करने के निये नैयार बैडे में अनएव छूटने ही बोरी-"आप होने कौन है जो आपका कहना मार्नु ? में तो केवल इसलिए कि आप पुराने हैं और पिता जी भी भागमें सलाह-बलाह लेने के लिए कह गये थे आपका आदर करता हैं और आर्थ सिर पर चढ़ जाने हैं। क्या आग चाहने हैं कि मैं गोल्ड आने आएके ही वडने

पर वर्ग " मुनीम औ इस उत्तर ने जिए सैवार न से। यह भूतूमात के मुंह से--उस चुत्र क मूँड म जिम उन्होंन गोद में विकाया था, जिसे उन्होंने मिखा-पदा कर व्यक्तार करन मंदश किया था-धह उत्तर मन कर स्त्रीस्थित रह

समारकान सामा उत्हेडम उत्तर की आसान वी। बंधा देर तक कह नह सहाद स खब्रसल का मेंह ताहत रह और यह

मीचन रह कि जाने की देन जा गए जिसकी काराना मात्र में उनकी

दिन द्राग करना था। भन को कुन को मन कर कम कर में कोने—'की रें। भार पाने को कम्म कीन मेरी कभी का गां को अर्थ नागये, परस्तु में अर नह द्रागे हैं जिसे अनुवित कम्मूना एस काम के गिए मदेव दोहता मेरेगा। मुम्में यह मही हो महत्त्र कि मार्ग यह या दिन्हें, में क्रायार मेरा-रोग देगा करें।'

कुपूरण बक्सीतमा से दोर्ग--- पदि बापमें गर्रो देगर बाना की बाद गार्ने कर देहें?"

चुमूनण मुनीम जीकी राज बात से मन हो मन प्रयाग हुए। समस्य---चामे अवटा हुआ, आंक्ष पुढ़ी पीर गर्दे।

# [ : ]

 38

लोगो ने चुनू को भी अहुत समक्ष्या बुक्ताया कि तुम अपने दुर्घ्यकरार के लिए मुनीम जी में क्षामा मौगो और उन्हें मना-मुनू कर राजी करी। परन्तु नमभाने वालो की अपेक्षा भडकाने वाले खिक थे। अनएर

नुपूत्रक ने इस बान पर कुछ ध्यान न दिया। उन्होंने केनक इतना किय हि मृतीम की को पंतान कंतीर पर कुछ मातिक देना पाहा परन्तु सुनीम में न एक पेसा तक लेना रवीकार न किया। उन्होंने कह दिया—"में कमी पुपूत्रक का मीकर नहीं रहा। निकास मीकर था समका था। में पुपूत्रक ना पैसा भी नहीं ले सनता।" इस प्रकार चुपूत्रक पर नो थोड़ा बहुन अपुत्र या वह भी हुद है। पत्रा । स्वन हुने के नियमतिक युद्ध के तर्व बहु मा यह भी हुद है। भागा । स्वन हुने के नियमतिक युद्ध के तर्व बहु मा वह भी हुने स्वत्र के स्वत्र स्वत्र स्वत्र का स्वत्र मा हुने में हुने हुने हुने हुने हुने हुने स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र का स्वत्र मा स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्व

हा के बता पर होने लगा। नाव्यक गांव का का किए स्थान कर । का में अपन्य के साथ हुन की भी बीत नीव नमजोर है। मह भी। अपने के नम में अपन्य के एति में ही मानी सेंड छामान का पूर्व का पान नो साय पार्थ अपने में वह दिन में ही मानी सेंड छामान का पूर्व को बाय पार्थ नगा। की मान नी पह नहीं सा मुमान नो मान पुष्पक को बाय ना सम्मान है। में पार्थ में मान कार में हुनी से नहीं मान मान बान पार्थ में मान पिया है। मिन सम्मान आपनी हुनी से नहीं हुनी में का बार मुमान मीति वर्ष मान बुन्य में मीति में नुनी। मान मान बाने पार्थ में मान प्रमान हमी कार से प्रमान का मान स्थान का स्थान का स्थान का स्थान हमी हमी की स्थान मान स्थान कार से से साथ मान स्थान स्थान का स्थान का स्थान स्थान का स्थान स्थान प्यान न आया। मन बाँ भूनान हमान सी दिया भाषा स्थान के से साथ की स्थान प्यान न आया। मन बाँ भूनान हमान सी प्रमाण स्थान स्थान स्थान का स्थान स्





मटरूमल बोले-"मई, जरा उँगलियाँ मोधी कर लें तो देखें। जाडे के मारे उँगलियां मोधी ही नहीं होती।"

कुछ देर बाद दहकती हुई अँगीठी मटरूमल के सामने आई। मटरूमल कुछ देर तक उसमें हाय सेंकने के बाद बोलें—"हाँ! भई अब लाओ

हुण्डी देखूँ। बुड़ापे में दारीर की दुरैसा हो जाती है। मेरे तो हाम भी अब कपिने छगे।" यह कह कर उन्होंने हुण्डी हाय में ले ही। उस बांखी के सामने लाये, हाबो के टीक नीचे ॲगोटी थी। अवस्मात हाब धर्रावे, और हण्डी हाथ

ने छूट अंगीठी में जा गिरी। जब तक लोगो का ध्यान उम्रही ओर जाप-जाय तब तक वह जल कर राख हो गई।

भगतान मौगने बाले के चेहरे का रय उड़ गया। इधर चुनुमल का

चेहरा मारे प्रसन्धता के खिल उठा। मटरूमल किसी के बोलने के पहिले ही बोल उठे---"क्या कहें, हाय

ऐमें कांपे कि हुण्डी सँभठी ही नहीं। खेर, कोई चिन्ता नही। (भूगतान लेने बाले से ) तुम हच्छी की नकल साओ और भुगतान से बाजी। अभी ले आओ, अभी भगतान मिल जाय।"

भगतान छेने बाहा जल-भन कर बोहा--"नकछ क्या भेर पान धरी है। । जब मँगाई त्रायमी तब आयमी। नकल मँगाने में तीन चार दिन

लग जायेंगे।" मटहमल-"तो माई में इसे स्मा करूँ। समय की बात है, हाथ

कीप गया। बृह्दा आदमी टहरा। परन्तु इसमे बया, तुम्हारा भगतान हो रह ही न जायगा।" भगतान लेने बाला बोला-"भगतान भला बंबा रहेगा, पर तीन बार

दिन का भ्रमेला सो लग गया।"

मटक्रमल— अब तो लगहीं गया, क्या किया जाव ?"



#### शरणागत

#### श्री वृन्दावन जाल बर्मा

रज्जब अपना रोजगार करके लेखितपूर औट रहा था। साथ में स्त्री थी, और गाँउ में दो-तीन सौ की बढ़ी रकम। मार्ग बीहड़ या और मुनसान । ललितपुर काफी दूर या, बसेरा कहा न कही लेना ही या इसलिए उसने मडपूरा-नामक गाँव में ठहर जाने का निरुवय किया। उसकी पत्नी को बुखार हो आया था। रकम पास में थी और बैलगाडी किरावे पर करने

में क्षर्य ज्यादा पहला, इनिटिए रज्यब ने उस रात आराम कर छेना ही टीक समस्य। परना ठहरता नहीं। जात दियाने से काम नहीं चल सकता था।

उसकी पत्नी नांक और कानों में चौदी की बालियाँ डाले थी, और पैजामा पहने थी। वह उस गाँव के बहत में वसंबद और अक्संबद कोर सारीद कर

र सामकाना ना

अपन व्यवहारिया संउसन रात-भरे बसे राज्य रायक स्थान की याधना रा किल्तु किसी ने भामजर ने किया। उन रागा ने अपने द्वार रज्जब की अस्य अस्य आर. सि. इक. वक. ४। इंक्सन म नरल का नगर नरह की ध्यर स्थला असीता स्थल असार कर द्या।

ग'वास परागराव अकारेश्व थर। शरान्य जमान शा विसरी

गसप्त तस्त हर ३ 'सत ३ हरी ३० क्रुस र सा३

र'राज अपने अन्यान' सादा जान समार अववादाया गाम जस्र रह त - हिंदी कि किस विशय का अस्मिन कि से से पहला पहला थी।

च्या र सम्मान च १ तु उसे में "शिव वार गर्द्र के आदिर अवस सम्मे



"हाँ सरकार!" रज्जब ने उत्तर दिया।

ठाकुर बोला—"तब भीतर आ आओ, और तमासु अपनी निलम ने पी लो। अपनी औरत को भी भीतर कर लो। हमारी पीर के कोने में पढ़े रहना।"

पद रहुना।" जब वे दोनो भीतर आ गये, टाकुर ने पूठा—"तुन कब यही छे उठ कर बाओंगे?" जबाब मिला—"अंधेरे में ही महाराब ! काने के लिए रोटियों बोपे हैं, इसलिए पकाने की जरूरत न पहेंगी।"

"तम्हारा नाम?"

"case ?"

[२1

थोडी देर बाद ठाकुर न रज्जन से पूछा-- "कहाँ से आ रहे हो? रज्जन ने स्थान का नाम बनलाया।

"वहाँ किस्तिल गये में <sup>7</sup>"

"अपने रोजगार के लिए।"

"काम तो सुम्हारा बहुत बुरा है।" "क्या करूँ पेट के लिए करना पहना है। परमान्या ने जिसके लिए जो

रोजगार मुकरेर निया है, वही उसको करना पहला है।" क्या नक्षा हुआ।" प्रस्त करने म जरा ठाकुर को मॅकोच हुआ और

श्रम का उत्तर इन राज्यव का उसम बढ कर। राज्यव न जबाब दिया— महाराज पर के उपयर कुछ मिल गया है,

रण्यतः ने जवाव दियो\*— महाराज पर के ठामण कुछ सिल गर्य ।। हो । ठाकुर ने इस गर कोई जिल्लाहों को ।

रक्षत्र एक रण प्राप्त प्राप्त — यह भीर एक कर बाता बार्डसा । वि नक प्राप्ताप्त कर बोध्यन अ क्षारी अध्याति इसमें बाद दिन भर के घरे हुए परित्यानी मी यदे। बादी राज गर्वे इंग्रेंगों ने एक बच्चे इसारे में टाट्टर की आहर बुलाया। एक पड़ी सी स्वार्ट ऑडे टाट्टर बाहर जिवार आया।

आपनुकों में स एक न पीर से कहा—'दाक व ' आव तो साधी राष नीटे ह।' कुठ सन्ध्या का सुपन पेटा है।

टानुर ने नहा— 'बाब बरूरन थो। भेर, कल देला बादगा। नवा गर्द ज्ञाय क्रिया जा।'

ही—"आरानुक बोला, एक नगाई रूपने नी नीट बापे इसी ओर आया है। परन्तु इस ओर असा देर में पहुँचे। यह सिसक गया। कल देखेंचे बसा अन्दो।"

. टापुर ने प्यान्म्पक स्वर में बहा—"नसाई ना पैसा न छुदेने।" 'बड़ी ?"

"नुगं कमाई है।"

"उसके रहवा पर कताई थोड़े ही जिला है।"

राया तो दूसरो का हो है कसाई के हाथ में आने से राया कसाई नहीं हुआ।"

"मेरा मन नहीं मानता यह अगद है।

हम अपन नलवार स उसकी शह कर सर्ग।

स्वादः बहस नवा हुए। पहण्य सावकार अपन साथियो को बाहर-का वाहर हा राज्य रहता

चलाइस ३० - पा चकाल भागाकुरभा

तो हरका हो गया था, परन्तु सरीर-मर में पीडा थी और वह एक करन भी नहीं बल संबंधी थी। -टाइर जसे वहीं ठहरा हुवा देल कर कुरिय हो गया। रज्वब ह

बोला—"भेने सूब मेहमान इंक्ट्झ किए हैं। गांव भर योडी देर में तुम लोगों को मेरी पौर में टिका हुआ देख कर तरह तरह की बक्रवान

करेगा। तुम बाहुर जाओ और इसी समय।" रुवब ने बहुत किशी ही, किन्तु शहुर न माना। यदापि गांव उपहें रुवबें के मानाता था रुल्तु अव्यक्त छोड़कत का दबदबा उसहें में पर भी था। इडाइस रुवब गांव के बाहुर सप्लोक एक पेड़ के मीचे वा बैठा.

भी था। इसलिए रज्बन गाँव के बाहर सपत्तीक एक पेड के नीच जा बठा. और हिन्दू मात्र को मन ही मन कोसने छगा। उसे आधा थी कि पहर-आधी-यहर में उसकी पत्नी की तबीयर

इतनी स्वस्थ हो जायगी कि वह पैदल यात्रा कर सहेगी। परन्तु ऐसा न हुआ, तब उतने एक मात्री किराये पर कर छने का निर्मय किया। मुस्किन से एक प्यार काफी हिस्सा छंकर लिल्क्य गाढ़ी के दाने के लिए यारी हुआ। इतने में दोगहर हो पहें। उसने पत्नी को जोर का बुसार हो याया। वह जां के पारे दर-पार कोंद हों, थी। इतनी कि एजब की हिस्सा उसी

सबय से जाने की न पड़ी। बादी में अधिक हुवा लगने के सब से रज्यन ने उस समय तक के लिए बावा को स्पनित कर दिवा, जब तक कि उस बेबारी की कम से कम कैपीयों बन्द न हा जाय। पड़े के पड़े बाद वादी पड़ेंगी के पड़े मार्च, पर्लू जबर बहुत तैन में स्पन्न कर कर जाती पड़ों के पानी से क्या हिला और सामित

ो गया। रज्यस्य न जननो पत्नो का गाडी स हाल दिया और गाडीबार । बाद चलन का कड़ा।

रणमाधान बारण== "दर्भ भर भा भरा रंगा दिया। अब अस्दी चछने भा करता हो।

राज्यत्त न कारणार्थः विराज्या सम्बद्धाः चारत्व ना नहा। राज्यत्त न कारणार्थः विराज्या सम्बद्धाः चारत्व ना नहा।



"कंस मीन उद्भा? किरामा ले चुका हूँ। अव किर कंम मॉर्मूमा "पैसे आज मीव में हट करके मौनाथा। बंटा! तलिबरुर होंग सो बतलाहेला।"

"क्या बतला देते ? क्या मेतमेंत गाडी में बैटना चाहते थे ?"

"क्या थे। क्या रुप्या रेक्ट भी सेंदमेंत का बैठना कहता है? बाता है भेरा नाम रुप्यब है। अगर बीच में यहबार करेवा दो साते को परो हरे में काद कर कहीं फेंक दूँचा और गाडी लेक्ट ललिटार चल दंगा।"

रज्बर त्रोप को प्रकट नहीं करना चाहता था। परन्तु सायद अकारण ही बह भक्त-भांति प्रकट तर के स्थान

गाडीबान ने इपर-उपर देखा। अंपरा हो गया था। वारों और सुनवान था। आवशत भाडी तथी थी, ऐसा जान पहता था करी से की निकला, और अब निकला। रजबब की बात सुन कर उसकी हुद्दी की गई। ऐसा जान पड़ा मानी पनस्थित की उसकी ठडी छुटी हुद्दी हो।

गाड़ीवान बूपबार वैडों को हुन्जि हमा, उतने शेषा—"नोह के आते ही गाड़ी छोड़ कर नीचे खड़ा हो जाऊंगा, आहे हहना मुख्य करने गोव नाजों की मदद से अपना पीछा रज्यन से खुड़ाऊँगा। रुपने रंगे पंते ही बायत कर दूंगा, और आने न बाऊंगा। कही सचमून बाये में बार डाले!"

### [4]

गाडी मोडी दूर और आने चली होगी कि बैस ठिउक कर खड़े हां गये। रज्जन सामने नहीं देस रहा या। जरा कडक कर गाडीबान से बोला — "क्यों ने बदमाय़" सो गया क्या ?"

अधिक करक के साथ मामने रास्त पर लड़ी हुई एक टुकड़ी में से किसी के कठोर कठ से निकला—' लबरदार, जो आग बढ़ा।"



त्यन न नाना । नाना— देवका भागप्त नकतानूर करो राज तो !

... ६ ६ १ जान ना । अगार्ड क्याई हम कुछ नहीं बान है।" धारना को गडमा । ' उनन - इहा---"इस वर हाच मही पंगार्थ और व इनका रेसा -- धर्म । '

क रचका रेखा दूरवं र' पुरार बाक्य--'त्या रचाई हात है बर वं ' बाह का ! बाव कुछानी

पुण्य वाना-- 'त्या क्या देशान है वर में ' बाह्र वा ! बान पुष्ता' म'द रर अपन रह नदे हैं, में दूधना हैं।"

वर पुरन्त काठा कर गानी न बहु गया। ताठा का गुरू । यस रण्डन कर करों ने जना कर उनन नुष्त्व एवस गैया निकार कर कृत का

, पुण्न 'रुपा । नाव प्रव पूर्ण । य ब्हांब्य न बरा नीड स्पर में बहा---' तीर्ष इप्तर राजा, प्रवय नव प्राचा । इनकी औरव ग्रामार है।"

्रा, बना बदा न हैं गारी में बड़ दूप लोत ते उत्तर दियाल्य में कारण का स्वाहें। मीर उत्तर रजन का फिर मलकी हा।"

र व वर १० इन व्यस्ति व दश्याः वदरहार, वा उन कुना, नाव व्यस राह हा कुना से इन वर किन का है। वह बरा बरण पाउ

त को स्टब्स केंद्र कव ना नार कर ना व उत्र आस। - इ.न. स्टब्स केंद्र कव ना नार कर ना व उत्र आस।

करी हर कहा करने करने भी बार कर नाथ उत्तर नाथा। तर ने करने जान्या ने कहा-- यक नाय ज्ञान नाम पर नामी। र प्राप्तर को एक नय करा। पिर मारीकान चुनारण--- सार, हो के में

र. भ माः दिन्द तक पूजा काला, तक पीटना । नहीं जो जानी पीट स्ट करोकनो । नीट दूव के नो बेच प्रभाव को करी हुए होते हो वर्षे राज की हो । नहीं की नाम के नाम कर सहक हट दो। ।

्रक्षा के बार्य १६० वह तथा। इन १ तो व ने विन भावता ने तारी १५ वह ५० ८०व ६ सर १० नहांद्र दानों वह अपने सुन्न १९० वे हरान्य

राज्य के वे करा । के करा | के प्रकार सामगुर कर समाराई है। इ. करावर स्टाप्ट कर के राष्ट्र कर राज्य कर का प्राप्त के क्षेत्र करी हैं।



उत्पाद ने आने इस्कोने बेटे को लिया पढ़ाकर अपनी भावना का नुसान् बारा दियाओं में कैलाने के लिए बाइट--बबरे केन दिया था। पूर क उन बारों आगा थी। बादाण के पहुन सरकार उनको जन्म से थिने दें। दर बोर न्यूनि उनके राज दिन के साथी दन वर्ष थे। उनसे बूढि में उनसह बा। बाराइ-दक्कन अफना को बहुँची हुई पूली का उड़ार करने की साहन की, ऐसा उनका लिए मानना था। रिकान उन दिवाबब करने के लिए सेना था। पहुने सा उन दिवस

रन हे होई की दमस्माहर प्रक के प्राय जम तक पहुँचनी और उने दां भगान शाम। जमम हर प्रकुल होता और उने ऐमा तथा है। इस ही आपा क्योंगुन हान का नमर अवद तिरह या रहा है। वर्ष का उद्यार और नार्य भगानित का पुत स्थानन, और बहुका गमान और गाउ नार्य गायानी प्राप्ता की भेटना, सम्ब और माधानी

त्यान और पर्याच्या तथा त्याची राजा—वे बातुन तिह के तह पा वर्ग में बाती आणी दिवादी वही । वह भागा बाहुण बान नातर वे तियो आणी हुई बपाइया डा लेत ने बीचार बाते हैं लि आहाताहुवे हुए व बात था। वर्गन वाह में दिवा में आहातवह तुब का समायार अना हो बच दारा पराण के बनाइयादी बाहाया की भीत हुगई दिवंग हुहुइब दारा सा सवास्त्र का उत्तर हुगई की स्विच्छान के स्वाच्या स्वाच्या हुइइब दारा सा सवास्त्र का उत्तर हुगई की स्वाच्या की भीत हुगई दिवंग हुइइब

हा गया। वनल के बतानकारीन बाहमा को भौति उसके निर्वण हुएव वे एका का सवारत हा बाता, पण्टु 'बॉस्क्यांजि क्रमीलि क्रमायाणाम-स्वत्रवा का सूत्र पहरूर कर हुएव को आक्ष्यांत्र ऐसा। बता करा तर बसूद, विशासिष्युको कार्र सन्दर एस ब्रास्ट्रियो

त्यां क्या नव बाइ, विश्वी बाइ की काई माद तहर उस अध्यक्षित क बाद न बाग परन्तु बनावत बच में उसका बद्धा थी, नारत के मात्र में उक्कों कामा का अपों के उत्पाद और बादन पर उन कराना की अस अने नवक बाधण करता के उत्पादनों प्रचला के नमाक में उन्हों



उनने गोविन्दराम अग्निहोत्री के विषय में पाँच गात आदिमर्थों

पूछतांछ की और अन्त में पना चल गया। किसी ने कोठरी दिलला री बिल पुत्र को वह धर्म धुरुधर मानना या उसका यह निवास ? एक औ गौचालयों की पश्चि थी, दूसरी और कोई लड़ा खड़ा मामने दर्गण टी

कर हजामत कर रहा था।

अतिश्वित स्वर में उस हजामत करतेवाले से पूछा---"गोवित्दराम

अभिनहोत्री कहाँ रहना है ?" हजामन करनेवाले ने मुँह विभवाकर निर

स्कार के स्वर में ही पूछा-- "क्यो क्या काम है ?"

'मुने मिलना है।'--उसके रूलेयन से सीमकर कुछ दहना से अलि-

शोबी जी ने इद्रा 'उस छोकरे मे पूछा'—कहकर बहह्यामत करने खगा । अम्निहोत्री ने

नमरे में बैठेएक ६-७ वर्ष के लडके नी ओर देखा। लड़का धरती पर बैटा या उमक मामने एक बाब का प्याला वा और उमके हायों में न या मध्मन न थी राटी हिन्तु गेंहूँ की कुछ जाली-जालीदार-मी क्षोज थी। स्टेसनो पर अग्निहीत्री मी ने मुमलमाना को यह पदार्थ बेचले देखा था इसलिए उन बन्तु को पहिचान गये। लटका उसको चाय में इबो-क्वोकर सा रहा था। ल बरे के मूंड म मेल की तह जमी भी और उसकी अलिंग में की बड़ या।

लड़के में बाद्य दूरी पर मंली-कुर्वेटी यांनी पहिने एक स्वी बेटी बेटी बाल काइ रही थी। इसको देखन के बाद अम्मिठोत्री को संग्रय न रहा। आठ वर्ष पहुरु जिस बाह्मण बन्या के माय लडके का स्वाह किया या वर्री भूनार कर रही थी। मारी हृदय से उसने उसने पुण-भाविन्दरान

कौत है ?'--इमर गांव की अन्यवस्त्रा कत्या वर्षी पहुंत देखें हुए

मयर को बेन पहचान । मानिस्टराम बाहर रूपा है। बया काम है ?" -742 TM



बासन मांजनेवाली साति से दासन मांज रही थी और नह बद हैं। जाने के सारण जूटे हाथ से उस बटे बनेन में से पानी के रही थी। एक हैं। सबसे जड़के भी बहु पानी उद्याल रहे थे।

अिंगहोंनी नी विचार करने नी मिल कह गयी। वह नारिण अध्य और रवाने पर था भर नहां रहा—और विचार करने लगा—गर्द गरिकरताम अनिहारी ना पार ? और दही ना सह आजार ? वह पर नेंग तहन कर और रामें किन बचार रहे ? बचा करे ? हतने में उछा ध्यान पर को आर गया। वृत्ते पर की यान जनती, वह को उठी और नेंगी की नेंगी—न हांच घोता, न मोर्च नों बोंडी पहिंगी और कुर्हे के पार्च माझर शांच उत्तर आयी। बहु देशकर अनिहोंची जी की हरिया हर हैं।

गयी। उन्हाने पगदी निरं पर रणकर पोट्टी हाद में ही। यह अपोर्धी दणकर उनका निरं पुमने लगा।

म बाहर हो बार्ड, चिर आर्डमा । बहुकर बहु पछ पड़े । बिन्होंने बहु में बाहर निकला । उमकी बीएच जोगो का तेज सम्बन्ध हो गया । उमकी देह का बण बाजा एता । उस तमण ब गड़ा कि में स्वर्ण दिना समार्थ है। उस नमक न पड़ा कि ऐस नमार स में हम्मीलए आया । दिनों में सम्बन्ध पड़ाई सम्बन्ध को और अनुसा प्रदास दिना ।

भागे पुछकर उपने समुद्र की ओर बलना द्वारम्य किया । शागर रेमकर उसके मन को भाग्वना हुई और स्तान-सम्बा करणे वह,त्वस्य हुआ। जो स्त्री और लड़का यह देवकर आया या वे बया मबनुष

रहुष्यय हुआ। आ शों और लड़ड़ा यह देशकर आया वा देश्या परवर्ष ही बार्किट्सम के वे ? इसे बात लेते के आसिल्ड कोई मार्ग व था। बराइट प्रार्थ सार्ग और देशा। सामये बोड़े दूर पर सक्द के विन्दर्क वस्तवस्थी दियर पर ने समझ प्रका उन्हों आसील्य कर रहा था। उनके हुएवं वा हुछ आसानन मिला

अन्त सं भारतमान बाह्यम की सहायना के लिए दौढ़ तो सही । पीर्ट पात्र कर क्षांक्रमाण के बान्हर है एस एस एसन एक्ट की बुझा की !



'नहीं',-स्त्री ने कहा-'मुक्ते तो वहां कुछ अच्छा नहीं लगता । 'तू इतने क्यं बंबई म रही, परन्तु मुघरी नहीं, चल-चल।'—कहरूर

मानिन्वराम आग्रह पूर्वक उनको ईरानी की दूकान में घसीट के ग्या । अस्तिहात्री की आंखा में कुछ चिचित्र प्रकार का तेज समा गर्मा। अन्यकार में भी वे समकत लगी। उस दूकान म से दो मिया नाई निरूप

और जदमदाने हुए चल गय । अम्तिहोत्री ने नि स्वान छोदा और शिवा-क्ष्य की आर बापम मुद्र गया । उसको लगा कि सुध्दि जलकर राज हो गरी है। ने क्व शिवा से उठकर आये हुए जब बहाँ पूस रहे हैं। मन्दिर की बच्चता उस इमजान म भी बीभत्म लगी । उमन मन्दिर के गर्भ द्वार पर आकर शहर का प्रणाम किया, परन्तु शकर कुछ कुविम-मे जेने । जान-थाल का विवास का प्रकास अन्यकार में भी अधिक कटटकर समा। पूजान बाह्मण को देखकर रागडे खडे हा गरे। एक कोने स हास बाहकर

बह खदा रहा । पान ही दा प्राप्तण बेटे बानें कर रह य ।

'बाई, कर बंध के यहां नवस्मा है, जानत हा ?

है ।'-दमर न रहा-वर राम

'err '

बर प्रशास्त्र है।

इसे क्षेत्र क्रांसार र अनाम न्या कर कर र 

. .. . .



46 गरुप-सङ्खळ भा रक्षा करने ज्या । वह समुद्र में जाने बढ़ता गया, सूर्व-बिस्ट पर निर्देश

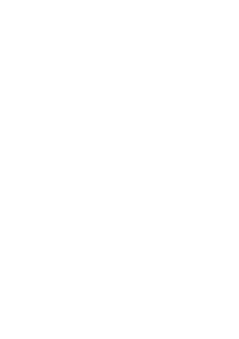
क्या है। क्ष्मित पूर्व जा नहीं।

तत्ता का तत्र बरमाया और मृत् में बाजा ----निलाबिनुबंदेखें ! तत् उम ह मृत तक आ गरी, अपर वहीं अधि तक पहुँची । यह स्थिर नेत्री आनं बढ़ा। अन्ति कन्द्र हो गर्नी। सिन्तर अपूर्व हो गर्नी। असहे निरंप

पारी बदन लगा । उस संस्कारी आसान अनुसारम देखें। उसरी और्नों के मापन

युवे (सम्ब नापता रहा । उथन आसार के देशन किये । कालों में हसरे नाम, काई होगे प्रधान दुए कह रहा वा-'वहा बता दि धर्मस्य महानिभवति सास्त ।

बन्द्वानसंपर्भस्य नदाःमान सुबास्यहम् ॥ उसन 'तृत्वां बतुवरत्व' बाजना आहम निया, परस्तु मुद्रे विस्व पूर ९ स, नाव बन्द हो गया और दमा सिमाओं में अन्यकार छ। गया । अन्नि-



लेता । कुछ लोग उमे पागल कहते, कुछ सनकी समभते और कुछ लो उसे महापुरप मानकर उसमें श्रद्धा रखते । मदासी होने के नाने वह रग में मुकते सवाया या और मेरे ही सम

उसको भी यह धारणा थी कि राम और कृष्ण हमारे ही स्प के हैं रहे होंगे। किन्तु श्रीकृष्ण जी से उसे एक ही बात की दिव सी कि स की समानता होते हुए भी उन्हें तो सोलह महस्व रानियाँ मिला और फिल नो एक मिद्री की रानी भी न मिल पायी।

रग की महापनस्यामता होने पर भी वह अपन को कामदेव से स्म नहीं समभता था। यदापि सवर्ण होने के नाते मेरा यह धर्म तो नहीं है कि में पिल्ले का नख-शिल बर्णन करूँ किन्तु कयाकार के धर्म की रक्षा के लिए आवस्यक समक्षकर इतना ही वह देता हूँ कि जब वह अपने काले भुन्व बरीर पर अधवहियाँ कमीज पहिन कर, लूंगी बांधकर, पेशावरी चण्ल पैरो में बालकर और माये पर लाल टोका देकर निकलता था तब ऐसी

लगता या मानो मध्यप्रदेश के अगल से पकडे हुए किसी काले मालु को

उजले कपडे पहना कर उसके माथे पर लाल पकी हुई भड़बेरी टॉक की हा। किन्तु पिल्ले उस समय अपने मन में यही समभन्ना या मानो नगर की सभी बुमारिया हाथों में वरमाळा लेकर अपने अपने द्वार पर उल्मुकता के साथ मेरा वरण करने के लिए खडी हो। वह फरांटे की हिन्दी बोलडा या और यदि उमका रगओर नाम ही उमकाभेद न खोल देते तो कोई सपने में भी नहीं समभ सकता या कि पिक्ट जी विकित्या से वरे आ रहे है। पित्य न नाइस जिन्द सभा रण्योच स्वयसवक सघ, समाजवादी

दर कम्पूर्तिस्ट पार्टा शांद सभ सम्याजा में बारो-बारा से नाम जिखा कर कमा दोडा बडाइ कमा बांग बढाए तमा मठ जिस्सा कमा नासिका और अणा के मा प्रवास्त का तत्र हाता. उरका कारण हो पर उसकी **तास्त्रा** 



## ग्रन्थ-सञ्चय निरीह विलंद ! मेरी तुम्हारे साम बडी सहातुमृति है। जिस देख में

€2

दहेज का द्रध्य पर में न होने के कारण लाखो कन्नाएं कुमारी रहरूर बुउरस तक बाट देती है, जहाँ अपने विवाह की चिल्ता में घुलते हुए माता-पिता की मनोज्यया को सहन करने वाली संकड़ों कन्याए यम को वरण करने के लिए विवस होती हैं उसी देश में ऐसा एक भी पिता नहीं जो अपनी कन्या लाकर तुम्हें दे बारे , ऐसी एक भी कन्या नहीं जो यम के बरने तम्हारे गरे में बर माला डाल दे ? काठा रग ही बाधक हो ऐसी भी बान नहीं है क्योंकि पिल्ले के रम से भी अधिक गहरे रम बाले, पिल्ले से भी अधिक विक्रत रूप वाले और पिन्ले से भी बड़ी अधिक उजडड, मुलं, देहाती आज दम दम बच्चा के बाप बन बैठे हैं। उन्हें भी तो कही पत्नी मिली होंगी

सिटादी । धोडे दिनों में वह मुक्ते मिला नहीं था। मैंने समक्त लिया या किया तो उमकी साठ-गांठ बैठ गयी होगी या वह कही बाहर चल दिया होगा। रमते जोगी का टिकाना ही क्या ? दो चार दिन तो मंने पूछताछ भी की किर में अपने वाम में लिपट गया। मैने पिल्ले को मुलना प्रारम्भ वर दिया।

न ? पर न जाने पिल्ने ने ही बहुता की दाडी का ऐसा कीन-सा बाल नीव छिया या कि उसी के माप से पत्नी मिलते वाली रेखा उस चौमुहे ने स्मड

स्मृति दोनो मुभ्ये दूर हो गयी।

बबई में गुजराती, मराठी, गोवाती, महाशा, सिन्धी, मारवाड़ी, पारसी, सिस, बोहरा, खोजा, मुनलमान आदि अनेक भेदों में हिट्स्टानी भी एक भेद है जिसवा अर्थ है युक्तपात का रहनेवाला। सभ्दे बडी उत्सकता हुई

मुपोगवरा मुक्ते बम्बई चला जाना पडा, इमलिये पिल्ले और उसकी पिछली दीवाली के दिन में अपने एक मित्र से मिलने शान्ताकृत चला गया था । वही बात-बान में उसने फिल्डे नी बर्चा छेड़ी और नहने लगा कि बह आबकल बर्बर म एक हिन्दम्नानी परिवार के साथ रहना है।



पीछे-पीछे से । मुक्ते अपनी छवाई चौडाई पर जो अधिमान या वह बाव इन देवी के आगे गणकर पानी हो गया । मुक्ते केवल यही आस्पर्य हो प्री या कि यहाँ की सीईवाँ अब तक बची केंग्रे पह गयी, छत अब तक उप

हीं नयों हैं । वे पत्ना में जा ममायी जोर हॉफने रूपी । में एक मोडे पर वा <sup>केड़ा</sup> और एक समाचार-पत्न उटाफर पड़ने रूमा । दवास की गनि टीक हो चु<sup>रूने</sup>

पर उन्होंने मुक्तमें पूछा— 'तुम पिल्ले क् कैंगे जानो हो <sup>7</sup>

28

'तुम पिल्लं क् कैंमे जान्नो हो ?' मेने सब कथा मध्येप में वह सुनायी। उनके चौड़े, गोल, गरकरि

विकटोरियाई मृत पर प्रमप्तना भी एक मन्द भूमजी रेखा देखकर मुक्ते भी उनसे बात करने भी प्रेरणा मिली । उन्होंने मेरे ब्रितिश्रीयल प्रमो की भी वित्तृत उत्तर दिया उपका मागउ यह है कि वे बाति की देवर है मेरेंट में उनका पीहर है, उनकी में स्थारी है, उनके पित पिछले हिन्दुन्यस्थित देने में कान आये, उनके पिता गन्यासी हो गये, एक ममानी कन्या है भी

कों में हाथ आहे, उनके पिता गयाती हो गते, एक मधानी हवा है थी बीठ एक पात करने मुठ काम करती है, यात करती है दे दोक देकि की बता बढ़ी, पर राजा अवस्था स्वष्ट हो गया कि उत्त काम को सीता कै निक्क हो बढ़ बढ़ी तासी है और हमीनियर स्टेंग्सी बस्स होसर महीनिया पार है, उन्हों वर फ्लिम में भी जान-पायान हो तह है और बहु पुत्र के माना स्वार है, उन्हों वर फ्लिम में भी जान-पायान हो तह है और बहु पुत्र के माना स्वार है, उन्हों कर प्रस्त मीचिया हो महिन स्वित्र हो से

यापि उनको बन्या के विषय में मुख्य कुछ भीतर नहीं जान हो सका किन्तु उनके विषय में में देवना अधिक बात गया कि उच्च उन्हों पर प्रवस्थ जिसका में मार्गिया महाया पाप के पार्थित या सकता था। अंकती था पर साथ है किन संस्था पुराग पार आग कुछ, नवस्थ

व स्वार वो प्रत्य पार्च किल मारमा पुराव जिल आग नुबाह, नामामा, अन्य दिला राष्ट्र से पर जिल्ला को सीमा स्वार है। पुराव बनान बनाते बन्दा न उसने स्व बनाओं वे सेर्टम के ज्याना परचालाप और होमा



बना का आखेट न बना हो, यहाँ तक कि मेरे माथे का बन्दन, सिर पर नी टोपी और वारह मासी सदरी भी उनके सूरमवेशी नंतो और मसंभेदी बैना में न बन पायी। पर में भी स्थितप्रज्ञ बना बैठा था। एक कान में मुननर अल्लाल उसे दूसरे कान से निकालना जा रहा था। में जानना हूँ कि मेरी इस उदासीनना से उन्होंने मुक्ते परम मूर्त, बुद्ध और जड समभा होगा हिन्तु दुमना मुक्ते तनिक भी दु व नहीं है, क्योंकि दूसरे मुक्ते क्या और क्यों नमन र

हैं इसकी मैंने कभी चिना नहीं की और अब भी नहीं कर रहा या। किमी भी अतिथि को जलपान कराना, पान इलायबी देना भारत हो प्रसिद्ध शिष्टाचार है । मिन्धी लीग पायड-पानी से मलकार करते हैं, पश्राव म दही की लम्मी चलती है, युक्तपात में पान या मिठाई नमकीन से स्वापत विया जाता है। बिहार में चिउटा दही परोमा जाता है, बगाल में उसम्बद्ध देने का शिष्टाचार है गजरान में चाय की प्रया चल निक्ली है, महाधार्ष

मं नमकीत नीगदाना और चिउडा दिया जाता है, मेरठ की ओर गर्बी में

लाग मिखरन पिलाते हैं एक भेली गड़ देशर पानी का लोड़ा बढ़ा देते हैं और कुछ नहीं तो कम से कम पानी तो सभी विकात ही है। हमारे सही प्रानी सीक्त भी है---जासन पानी मोर्ड बान ।

सर्वात के पर महा मकत ।

श्रीमतंत संस्थासर्गाः । श्रीश्री शांता सौ बात सो स्वतंत की र र र र र र र प्राप्त कर के उस मार्थ का सा प्र**पानी क** क्रमान राज्य राज्य राज्य राज्य का अभिनामी र ११ र ० मा १ । र रासवासीधी।

The statement will a state of the state of t



14 परिय-सङ्ख्य प्रत अभी सीधे नहीं हो रहे हैं।

अस्य भएकावर नकारात्मक उत्तर दिया । में समक्त गया कि पिल्ने के

पिन्टे में मिलने पर मुक्ते इतनी प्रसप्तता हुई थी कि में जब लीडरू घर आया तब कही मुक्ते मुख आयी—अरे पानी तो मेने पिया ही नहीं। उस दिन संपिन्त भी मेरे पास आने जाने लगा और शारदा जो भी।

कभी वे दाना अवेले-अवेले आने, कभी इकट्टे, और यह कम लगभग नीन महीने चटना रहा।

'प्रसाद' जी ने आजकल के महिला-अन्दोलना ने इरकर और 'डोड़ मॅबार, सूद्र, पस्, नारी छिन्तनेवाले सर्ववन्य कविना-कामिनी-कान्त गास्वःमी नुलमीदाम जी के विरुद्ध स्त्रियों का खुका विद्रोह देखकर उन्हें बहुमाने के

लिए मुठे ही लिख दिया है---'नारी तूम केवल थादा हा विस्ताम रजत नगपद तल में १'

और स्त्रियाँ भी इसे पक्कमुनकर पूजी नहीं समानी । पर वे यह नहीं बानती कि 'प्रमाद' जो ने भी इसमें पुरुषों को बड़ा मिद्ध करते हुए कहा है योज मी बहा करो ।' उमलिए मन इन पश्चिमों को 'स्वान्तः मुमाय' इन प्रकार बदल दिया है....

नारी कभी गरी ही श्रद्धा

पर अब ईर्प्या मात्र बची है। कभी रही हो मानव-माना

पर अब जन की बच्ट चनी है।।

अपन क्लिया र मध्य स राजा वह वेद वास्त अवस्य मुना होगा कि । भीत ता निकृत कर पर वर्ग ताला । प्रत्य अवसामना स्त्री अपने पति के पास बान रानवारी सांपर्य हा १४१ है। उपन्या पर की स्त्रीत्वर्षे में



गरप-सञ्चय इसीलिए में जब कभी बाहर जाता, अपनी परनी को साथ से जाता। उन्हें

40

पांचा देकर में अपने आरमा को पोला नहीं देना चाहता था १ मेंने भी रिज ह या या विदिये सान्दा के घर जाता छाड़ दिया। पर वे दोनो या जड़े उ किसी चौराह पर या रेख मोटर के अब्बे पर चिल्ला विल्ला कर 'बरर्प अचन दिखायी पह जाने और वहीं नमस्त्रार-प्रणाम भी हा जाता और तुसदमगढ भी।

उसमग बार महीने बीत चले । में समभता थाकि इस बीच शारी गारदा ने ही बह दिया हागा-

'नुम सम पुश्य न मासम नारी'। यापिल्ले ने ही कह दिया होनां⊸ 'अपित है मेरा यौदन मन ।'

क्वाकि में शारदा जी के प्रथम दर्शन के हीदिन समक्त गया था कि विभाग न इनके भाज पर भी पिल्ड की भाग्य रखा बाजा छापा ही ठोड मारा है।

उनका मृत्यरी बटकर मृत्यरता का, कामलावी बटकर कोमणता का,

ाजिवनी कहकर शील का, सुरासिनी कहकर हाम का, हमगासिनी कहकर हम की मति का, तन्यगी कहकर तनुता का, सबू आविशी कहकर नर्

भाविता का, विकासिनी कहकर शुनार बेच्हाओं का में एक साथ वनी रतना नहीं चाहचा था, एक तो स्त्री [त बाहत हुए भी उन्ह स्त्रीहीकहन की विवयं हो रहा हूँ। दूसर बर्मवादिना, एक तो नितलोकी; किर नीम बडी ।

इसक पनि हान का मीनाच्य बही प्राप्त कर मक्ष्ता या निवृते विधन दर्ग बन्सा स जीवनाबाहन, पन्द्रह जन्मा स यम बाहन , इश्कीस जन्मा से जरव बाहन और गच्चीम क्रमा म एडमा वाहन बनन की अर्थाउन न समा का हाना। मन्त विस्वास हान लगा कि विस्त न इतनी पार

न्याच्या बाहा हो होता अस्य राजार अस्य वर्ग बता महादेश की के महि देव हे बेटल की पूर्ण के उपके हैं जा है के मान सहसा देखी 



मेरी श्रद्धा और भी गहरी हो गयी। मेने श्रद्धा-विङ्गल होकर कहा-'भल न जाना इसे।'

जपनी पर्ली को भी भेने समाचार मुनाजा। जिसे पूटे मुँह भी गिन नहीं भाता था वहीं फिल्टे की इस महता में प्रभावित होकर उसके किर चार छड्डू ले आयी—'मुँह मोठा कर लो।'

बिस दिन बह दिल्ली के लिए बला उस दिन में भी फल माला लेकर उसे बिदा देने बोरी बन्दर तक गया था और मेरी पत्नी भी हठ करके मेरे साथ गयी भी।

बर्धवारी राज के अनेत पुनक मुनियों का समृद्ध वहीं पहुँचां हुम भा दितियं कीनों के तमें ती तथा कि एस वि हों की हुयाँ पर साराय दी, तीसरे पर काय किन्छ । साराय में, बारे उनकी माना में रोनों करे रिक्ती का पहुँचाने का रही भी, उनका घर भी—मेंटर भी— उपर ही या ना ने मुगया में विचार ही यो, उनका घर भी—मेंटर भी— उपर ही या ना ने मुगया में विचार ही योगी, उनने पून भाराले पहुलाशी। मेरी पत्ती ने अपने हाम में कुर माना को पहुला हो। पत्ती पत्ती पत्ती पत्ती मेरी पत्ती ने अपने पत्ती मेरी पत्ती ने अपने पत्ती मेरी पत्ती ने अपने मेरी पत्ती हो। सामें भी को सा कल में जब रिक्त ने कमक मुन्ने हो जाती है। सामें पहुला न सामा मानी साहित हो मुने पत्ती काता है। सामें पहुला न सामा, मानी साहित हो मुने पत्ती काता है। सामें पहुला न सामा, मानी साहित हो मुने पत्ती काता है। सामें पहुला न सामा, मानी साहित हो पत्ती हो। सामें प्रतिकार मेरी मेरी के सा उठ गया। फिले ने नहा—मक्से पहुले में पुर्व किंद्री हो से अपने सीमाय तर च चित्र में काता उठ और देखा कि ना कर्ड किंद्रीह प्रतिकारी मेरी सहान में आपना है।

याद्री ने सीटी दी। याद्री बन्द पड़ी, और हम लोग अपनी महत्ता पर रत बरन हुए लोट आया और अबस अधिक रम तो सक्ते तब आया बंध - रे पत्ता न कहा-- बट अच्छा थ बचार।

.मा का बाल्मोर्गक जो त काण की प्रतिक रता और अनुकलता सहारी है।



इस पत्र को पडकर एक बात तो यह नई ज्ञात ट्रुई कि महादवी वो के जितने नाम मेने कल्पिन किये थे--विकटक्योला, करालघोषा, प्रवर्ष-

वदना, कटाह-ग्ररीरा, महिष-मान-मदिनी, मानव हस्तिनी आदि, वे मने निरथंक हो गये और उनका नामकरण करने वाले पुरोहित पर बडा रह आया कि यदि उस मूढ को केवल पाश्वाची ही नाम रखना या तो गर कडाई, रामहढिका, राममटकी, रामबुदला क्यो नहीं रक्या, यह राम क्टांगे नया दरिद्व नाम उसे सुभग्न । पत्र पढ़कर पीछे उलटा तो उस पर पिल्ले ने लिखा बा—

भीने और शारदाओं ने कम्यूनिस्ट पार्टी से त्याग पत्र दे दिया है। विवाह में अवस्य आना ।'

और उसी के नीचे महिलाई अक्षरों में भारदा जी ने लिखा था-'माभी जी को भी अवस्य लाइयेगा।'

पन पड़कर में कितना भूँभलाया हुँगा यह तो आप इसी बात ने ममक सकते होगे कि उस पत्र को मुरेड तुरेडकर मंने तत्काल रही की टोकरी में फेंक दिया। मेने अपने महत्त्व का जो कात्पनिक प्रासाद उठान या वह इस पत्र ने क्षण भर में ब्वस्त कर दिया। जो पिल्ले अपने अभिन्न मित्र से इतना कपट करके इतनी सब बाते छिपा मकता है, शास्त जैसी अरूपा कन्या से विवाह करने के लिए इतना रूपक बांध सकता है वह न तो पागल हो सकता है, न सनकी। और महापुरव ? छिः, वह महापुरव

की पन घूलि भी नहीं हो सकता और में पिल्ले के उस प्रवचनापूर्ण रूप पर यभीरता से विचार करने लगा जब उसने मक पर अपनी महता का आउड़ जमाने हुए असन्य कहा था-- में रूम जा रहा है।'



## गल्प-सञ्चय

90

शीं दिया था। १००५ एम ने विज्ञान नहीं पढ़ा और न हिमी ममोपराज व अपेग किया, किन्तु दर्धों और जन वा निमंग इस चुनुराई ने करते वे कि असाम अपूर्ती के अमरेना आत्मा महानित्रके में विद्युप्त हो उठती और अनको मधुसामा के महास्था को तो हमका कभी मन्देह भी नहीं होंगा। पनद्दाम माहिएक के उस विज्ञान के अमरे आता में निमंक अनुमार करा की

उनका संपूर्णाल के नहस्या का ता इसका कथा नरद्व था नहु एगः प्रकट्ट एगः है। विश्वा लेगा ही सच्ची कला है। विश्वा लेगा ही सच्ची कला है। विश्व प्रकट्ट हिस्स क्रोडला र जनके ही, किल्तु धन जोडला जानने थे, विश्व प्रकट्ट एगे। जनके प्रकट्ट एगे।

सहित्य अपने में किन्तु हाहित्यनारों को जानने थे। उनमें ब्रिलिंग नाहित्य आमें में किन्तु हाहित्यनारों को जानने थे। उनमें ब्रिलिंग न थी, किन्तु अनिभा उनके पाम एकत्र हो जाती थो। उन्धन्यला हैं स्थापार से इन्स बहता है, देशा जान पडता है। उनके पास भी हमये उन्हें निर्देश में को अपने जबर में प्यान यहती है। इसी शोष सूचित मूर्पिय के प्रार्थ किंग मुगी। स्थापार के अनेक नामन दिलायी पड़े, मानो अधीराम

के लोह का द्वार लाला। पलटराम ने एक लगाया और बार पाया।

कुम्बार के कार्य को अमिन में मिट्टो के जांत पर्यक्त हो माने है, वस्त में बीज में के लिए के बर करने से राक्त हो गये। राक्ट्राम को गोंने सम कार्यों ने कार्यों ता कार्यों ने कार्यों ता कार्यों ने कार्यों ता कार्यों ने कार्यों के लिए के

नीनी और महि के खारानों कर नथा। ठोड होन वर खारान भी तरि में जीत बातुं का तरिन को ठीड करना। गरानारी के क्षेत्रानिक के कुरान-दिखें हुआ और भवद्राम को नाटमंग्य मित्र तथा। कहा जाना है कि मुद्धावर्षों गर्दे को भी क्षिमी असार हुआ नाटक्या पित्र जाता ना का न्यारानी व्य जाता। भवन्यान ना उत्पार एका क मन्द्र व जन गरा। मासक्द व्य त्याना प्रवास कर मार्ग



इस प्रकार प्रणाम किया मानी साक्षात् विष्णु भगवान की नमस्कार क रहे हैं।

पलद्राम ने देखा । पूछा--'कहिबे ।' मन्त्री जी बोले---'आप का ही दर्शन करने के लिए आगा हूँ।' पलटुराव

चुप रहे। उन्होंने सोचा होगा मेरे दर्धन के लिए कोई आया है तो में देशन

हूंगा और देवता मौन रहते हैं। योडी देर दोनों व्यक्ति चुन रहें। फिर मन्त्री जी बोले--'अखिल भारतीय हिन्दुम्तानी मङ्गल का वार्षिक अधि-वेगन है। सब लोगो की बड़ी इच्छा है कि आप ही उसके सभापति हो। मूर्वता देवी का अपर्शिमन प्रसाद पाने पर भी इनना तो वह नीव ही गये थे कि ऐसे अवसर पर क्या कहना चाहिये। बोले-इसके लिए

तो कोई योग्य ब्यक्ति चुनिये । में अपत वहाँ क्या करूँगा । हम लोग उन्हीं बातों की प्रश्नमा में प्रमान होते हैं जिन बातों की हममें कमी होती है। जब मूर्स को कहा जाता है कि आप बृहस्पति के बाबा के समान है तब वह प्रमान होता है। मन्त्री भी ने उन्हों मूत्रों का सहारा लिया जो भाणक्य के काल में चले आ रहे हैं। कहा-- कालेज और विश्वविद्यालय में पढ़कर ही कोई विद्वान नहीं होता । आपन समार के विश्वविद्यालय में शिक्षा पायी हैं। और आपका तनिक सा सकेत हो तो किसी विश्वविद्यालय से डी॰ लिट्॰

दिला दूं।' पलदूराम ने मोबा--पल्ट्राम डो० लिट्० कानो को क्यिना है। फिरयदि आप लोगो की सेवान करूर तब भी नहीं बनता। कहिंग न्याकरना होगा।' बैसे काई नवविवाहिता वध अपने पनि से बोल रही हो । मन्त्री जी न नहा--करना कुढ़ नहीं । चल चलियगा

पलदसाम—वस

मन्त्रा सी बार—र'। और क्रं, रंग दी/अयगा ।



मुनलमानो को मनभेद मिटाना चाहिये। हमारा प्राचीन देश मरतवार मलमनुमी के लिए प्रसिद्ध है। हमारा आइसे बैठ है जो स्वय मुना <sup>बाड़ा</sup>

विदानों की मीड में ।'

૮૦

है और हमारे लिए जनाज छोड़ देता है। आप मुमलमानी की मलाई केंद्रिय, यह आपके माई है। हिन्दी और उर्दू हटाकर हिन्दुम्नानी का व्यवहार कीर्रिय।

नहीं देश का मूपण होता। आपन के प्रेम के रस में हमें भीवना चाहिये।

गत्य-सञ्चय

हम एक दूसरे का मार प्रहण करें, गले मिलकर एक दूसरे को मेटें। कलह हो मोड़ में दे डालिये, स्वाबीनना का मोर आ गया है। हमें इनका स्वातः करना चाहिये । में मापण देने के योग्य नहीं हूँ । विरोधतः जीव कें

जापण का नया परिधाम हुआ कहने की आवश्यकता नहीं !



सहायता से अग्नि प्रज्वलित कर दी गयी । रक्त चन्दन, रक्त पूष्प, रक्त-बस्त्र, तथा पूजन के अन्य सभी एक्त उपकृरण लाकर भूगपाल ने पार्थ में रख दिये । जलती हुई अग्नि-शिला के रक्ताम प्रकास में वे सब और बी अदगाम हो उटे। बलि के लिए एक महिद लाकर गुप में बाध दिना

गया तथा रक्ताच महिरा, जरेल अरेलकर तान्त्रिक पीने लगा । पर्याप्त मात्रा में मदिरा पी चुनने पर जब उसके लोचन ही नहीं. क्पोल और चिबुक भी महारण हो उठे, तब उत्तरी आजा पाकर शृत्पाल एक नर-कड्डाल ले आया । ब्याध्न चर्म के ऊपर उस कड्डाल की रावुकर

नान्त्रिक ने अपना आसन बनाया और उसी पर वह बैठ गया । नरपुष्ट के अस्यि पात्रों में रखे हुए पूजन के रक्त उपकरण कुण्णारजनी के निधीय में घोर भीषणता की सुष्टि करने लगे। मदोन्मत सान्त्रिक शवासन से उटा । एक हाम में उनने खणर <sup>लिया</sup>

और दूसरे हाथ में तीरण खड्न । यूप बद्ध महिष के पास पहुँच कर व्यन सर्थे हुए आपात द्वारा महिप की गर्दन काट दी। पृथ्वी पर छटक कर विधान भूगो बाला मस्तक तलफलाने लगा और धारीर छटपटाता हुआ पृथ्वी पर गिर पत्रा । बहुती हुई रक्त की धारा पहले तो खप्पर में लेकर तानिक ने महाकाली के चरणो पर चढायी और फिर शीधता के साथ अनेक बार खप्परो को भर भर करके स्वय स्नान किया। एक खप्पर में जमते हुए रक्त को भरकर उसने हवनकुण्ड के पास रख दिया। उस असी

की निस्तब्ध राति में शोणित-लिप्त तान्त्रिक की भीषण आहति देखकर नित्य का अभ्यस्त श्रमपाल भी कोच उठा । मन्दिर के आम्बेय कोण में <sup>की</sup>र्ग हुई तान्त्रिक को शिष्या स्वामलागी भी भय ने तस्त हो गयी।

तान्त्रकत रक्त वण के उपकरणों में महाकाली की पूजा की और लोमअस्थि-युक्त महिष-माम लवर हवन करने लगा । पैछाबिर

बस्य म समस्य मन्दिर भर उटा जिल्हु जजारन पत्र की भौति हुवन करने



बोर बद्दरत हो दारमा हं करने की आज निषी। गट्या प्रदासने क्यों के किए जार पूर्वकों, दिसारी बेहुएव कीर्ति पार्टायून की दिसायार्थ ब प्राथि हुई में जावनाम में बेंड विकास आधानने वार्य्यक हुना हाम्यों क पांच्यत पर विद्यालय मांच्यत होता जा उठा था। उनकी वार्यों के तहें में महातक नहीं हो रह थे। उनकी निविध्यन-पालमा का उक्क प्रमास मूर्व बाह करने लगा

पाडा शहुन के विनालन की अगराजन प्रतिका से नास्मीर की विद्वा क्षाक्त हा देश । प्रवास कर उसने अपने प्रतिकृती जा हाल प्रवद्ग विश् और एक संस्थान कटहा तुनी हुई वोती—

नग भारतला । और नर प्रस्तांका उत्तर का !'

न बान प्रपंध बीका में होने भी धीन थे। बिने स्थान ही पुष्ड हैं नाय भोक्त बन हिमों ने खान थी और उम प्रता बात गए, बेन उमहें अभ्या का प्रभीर ने निहाल कर नहीं दूसर ब्यान पर हिमों ने रण हिंगे बोर नव इन नार्य के सम्बुख मजाहीन, माहपूरन, पास्त्राई ही और विकास स्था है।

ना ना विद्वा बहुता नाती या नह मन नहतून क पुत्र न स्वाधार <sup>हर</sup> दिना नार १७क बहुत पर पहुँ के तुम परानिक हा ने उसन नाती श्री है<sup>ति</sup> व द्वार नन्त भी उस भारत श्रीकानितामा नारी ने कहा—

क्षात दुवक । जब ४८६८ ग्राम्बार्य मच्चा वे ज्ञान रणजा वे

प्रभाग किया की पापणा स्था कर हो है। सकता की पापणा स्था कर हो है।

बर हो । कल ने देन मारावितों ने बहा--- बच्छा अब तुम रावती है बड़े बाबा और तीन पेता तब पेबी रबाल दशायत में माब रही है

नक रोनों को कडनांगरण का उत्तरण ये प्रश्न उत्तरका बारदान करें ग्रेस : इन मनत करों ने १८३ में कर । च वह बड़ी बारदा है।



पुत्र आया । यहाँ सब समाचार सुनकर वह स्तब्ध हो गया । गुरु में उन्ने

28

अकर नारी भटना कह सुनायी। उसने कहा-- 'बत्स ! उस कारमीरी विदुषी को समोहन विद्या ही

सिद्धि प्राप्त है। उसकी तारिश्रक शक्ति के सम्मुख तुम कुछ न कर मकोगे। अन प्रतिशोध का विचार त्यास हो।' पर भैरवदत्त का अन्त करण जन्याय, अपसान और प्राप्त प्रतारणा की

ज्जाला में दग्य ही रहा था। उसने अपने जीवन का सहय बनाया उन्ही दोनों स्वक्तियों को अपमानित करना, उनके जीवन की मुख-सान्ति निगट

करना और पाटलियुत्र के सम्मानित पद से उन्हें नीचे सिराना । नात्विक मिद्धि प्राप्त कर प्रतिशोध लेने की कामना से वह कामहर्ष के कामाक्षा मन्दिर में जा पहुंचा।

कापालिक भीपणानन्द की पांच वर्षों तक अनवरन और भश्निपूर्व परिवर्षा करने के अनलर उसने मारण, उच्चाटन और वीस्त्र की सिद्धिती प्राप्त की । अन्त में अपने हृदय का आराव आचार्य भीषणानन्द में ब्दर्श

किया। आचार्य ने महाकारी दयामा का अनुष्टात करने की अनु<sup>मृति</sup> दी और यह भी नहा कि दीपावली की राजि में पाँच क्यों तक इस अनुष्टान

उष्टु, महिप और नर के लोमास्यि युक्त माम की बन्ति देनी पहेगी। प्र मकार की उरायना को अपनाना होगा और भीषण परिस्पितियां की

का वाधिक आयोजन करना पहेगा, जिसमें प्रतिवर्ध समझ विहास, मेंपे,

सहना हागा । अलमें उन्हाने बहा-- 'बन्म भेरवदश, आज ने नुम्हे में अपना

स्रात पर तुम अगिमादि मिद्धि प्राप्त करने का प्रयान करों ।

विषय दीधित करता हूँ, परस्तु में चाहता हूँ कि इन प्रयोगों को मापना के

पर प्रतिष्ट्रिया की भावना में विकल भेरवानन्द का कुछ अच्छा न छन्।

हुइ करने पर आचार न महादवी दरामा की एक-वार्षिक अनुष्ठान विधि दिश्वाण हे साथ समामार और नवणकार गामामा का रक्षाय में बनारा रहा ।



एक कुल का समय भी नष्ट न कर उसने रख सम्रद्ध कराना और अपने कुछ अनुवर्ग को साथ ने काशी की ओर बन पढी।

## [शार]

भीट्रा-वित्वाची रात के सभात उस शेरावची की कृष्णा तर्वास्ती में भी भागतत हुआ था। नाहब तृष्य हा चुक्ते पर जब दर्शनाथीं कर बहै, तब शेरायत न रात्ताकों क पूत्रवीरात्रण एकब दिये। आज शेरा-नत्व ने श्रीयाल को नहीं वरन् स्वामणाणी को बिन्धान्त बाण्ड को तर्व की आजा दी।

वह विमानवा जान का व भाज हुए बारक को बवाने पहुँची, हन नमा निर्मित बारक के मार पूल को देवकर आहे हुए का पानुत अहर करा। वह पून वह कि के नेवानक के बंदना को में अनुक्षी हूं। वह वह भी पूर बार्ची कि अन्यानन की जीना में आजा पान्त कराने की बनाई पॉल है, उनसे बनना अन्यान है। भाव ही वह पून वार्ची उन बार्चा कि की कूरता, दिनक काम्य निर्मित की बार्चाभाजी होने पर, जाती पान्त में दिन आहे कि काम्य अन्यान वास्त्राचीय उपान्ता के अनुस्थान कम में बारी मां भी अपना प्राप्त पर किसी कूरता के मन नम्ब वास्त्रा करने के बारी मां भी अपना प्राप्त कर किसी कूरता के मन नक बार उनकी पान्ता हुई था। अब स्थान नम्ब कि सम्बाध कर की उनकी जा प्याप्त करने हैं और अब बीजो, आन प्राप्ता को दहन की उनकी

बानी तम यन जोर नवस्य नार्त्यक के प्रशास में आंतर कर दिवने दान कितन कर भार किएट क्यों में जानाव की नाका गायन करदे ने नार कर नार्त्य कर्नान ध्वारण क्यां पर बात करी दहानावारी मान कर ...



एक और बालक को लिए हुए दोना स्त्रियों अन्यकार में भागों जा रहें भी और दूसरी ओर मण्डण में बैठा नान्त्रिक बार्यवाद स्वायलायी से पुकार रहा था। प्रत्यान को उसे बलाने के लिए सेन्ट कर भी कर सेन्ट

पुकार रहा या। श्वापाल को उसे बुकाने के लिए भेज कर भी बहु दौरा हुआ स्वय उसकी हुटी में जा पहुँचा। स्वी की एक हैंगिओं हात हुई छिप कर उधर बात देग यह पहले ही आधिनत हो उठा था। हुई। की मूल देस कर उसका हृदय रहस्य धमक गया। गुण हार में बहु में

को मून्य देश कर उनका हुस्य रहस्य अमक साथ। मृत्य होर से ने कु में बाहर तिकल कर नगर की ओर जाने वाली पणहरूमी पर स्थापनाथी की पुकारता हुआ जैसे में होन्से लगा। हुछ हुर तक तो कोई रियायो की एक रहा था। परना करती साथा तीलते हुए

पह रहा था। परन्तु हुए ही स्वय बीतने वर जम शहन करवाहर में थे पूर्वण मुद्धियाँ दिसावी पत्ती भेरतावतर की गति तीह हो गये और स्वायणांगे की पुत्राने वा कर भी तीह तर हो गया। दोनों का अन्तर धीरे-धीर केम होना वा ग्रा या और निवार, मानिक का इसरामा मननन सम्मोत हा रही थी।

हर के कारण जनते पीय कोपने क्यों ये और यान मन्त्र हो रही थी। रानने में नेपानक ने गान कर दाना किया को कर जाने के लिए हता। उनकी सामी में जाने कीन ही गानित थी, जिसे मुनने ही दिवसों को धीं पूर्वत मंदिरक हा गयी। ऐसा जान का जीने पीती में कियों ने बीची यान दी ही, गानिक पास पुरैसने क्या। ही जायन सूत्र हो जाने हा प्राथमित के प्राथमित के प्रतिकृति के स्वीत्र

दूरी जयन यान दान पहुंचन स्वा। दूरी जयन यान हो जाने वर स्वामकाशी को पुकारते हुए भैरकी नव्य न कहा— दुष्टा नारी ' दनन दिनोतक पर यहां रह कर भी यह विस्तानपार !!

त्र के भाग १८०० विकास सरकार कर नी यह विश्वसम्पात । । तरक भाग १८०० को नाम समकार कर मिनागा । मिन्नि के जीनान क्षेत्र में इस क्षण का पान जान इस इस विकास के बाग के क्षण के के समी

तर त्रिप्त कर का बार्यक से माने का बार्यक से स्वाप्त कर कर कर का का का का का का माने का माने का का का का का का



९२ गरप-सञ्चय
उदन दुई । पर काश्मीरी विद्यों ने तानिक के भरणा यह महनक एक

रिया और अपि का अप्ये बहाती हुई करण स्वर म बोधी---'वानिसर, कुशारी परित के मामन भें बगावित हुई। तुरहार और तुरहारे पिता है गांध बरावाधुर करन पर आवे मुक्त अनुताब हो रहा है। में धमा बाहमें

ता के कार पहुँ करने पर आज मुक्त अनुसाव हा रहा है। में आमा कार्यः हुँग जान रथी न अमा मायागी ! नुक को जीन की जाने कारी है न ! पर उन दिन नुध्यारी धना कहीं भी जिस दिन मास्त्रार्थ में पर्योक्त

त ' व र में दिन तुर्हाण ध्या बही था दिस दिन मात्राव थे वणाया राष्ट्र नो भोटना धीनत ही यावा भ विजना और उपके शिना हो हैं स्थानमा हर होना। नाएँ जाहरू नी तुनने होनो कूमा ? ठाह येगे शिक। तुक्क प्रितिनों हा स्था नी ज्याना व स्वीध हामा है!

एक। पुन्न पापिनों का स्थाप तो ज्वाना व अधिक उपने हैं।' गामनावा की बाद व बालक का न रोड्डिनियुरी व कहा---नादिक' न अभ्वत हैं और अध्यापको पर वृद्ध पब्चामत हा रहा है। भरा तीका

ने बोरना है और जान पापा पर बुक्त पहनासार हो रहा है। धरा औरन के दो, नदा देनहें के बा, पर जायक को रक्षा करा। सदा भर गई गोर्ट स्पृत्त और जानी मध्यति का नीपकार व या जपन हाया में। इसे

बानक का बा बाना ही परश्रकता म रखा । हम पतिनानी पत्नी है पत्नी का प्राथमिक करन कर चहु कर बारत है बार्नाविन्दी में बार बार्न्सिक में नहीं वर्तना । बढ़ एक ही उद्देश

वापना वर्षक राज बारा है और मना शांतारी मुश्रांव के बाद भरी बरण बन्दरा के देश - शांत्वक शांव कार्य हो वा दा बारा के प्रशांव ने पर कर ने बरना भीक्षात नार ने कवेंगा। जाब इस बारत की बीव इकर बन्दरा दावरामांगा पूर्व कवेंगा। जुन बाजा शांदीरपुर । जानी

रवा वर्ष प्राप्त करा । भीन वर मन्त्रमा । जान व दश वर्ष प्रति ह वर्ष व कन्त्रक चीन वर्ष चन र व कन्त्रमा को वर्षन ३, भन्ना । भावन्त्रो क कन्त्र महा और वीर्ष

क्षण्यां का कार्यात्र अन्तर्भ । अवन्तर क्षण्यां अवर और से स्टर्शक करण रोजर । । । व व व र इक्स करण सर्व



## शे शे मुश्री कमलिनी मेहता

'टन, टन, दन ..'

मध्य रात्रि की घोर निस्तम्पता घण्टे की गम्भीर व्यनि वे <sup>कार</sup> उदी-मेरी भी निता भग ही गयी। में दिन भर की याता से यक कर <sup>व</sup>ही.

पण्टेषर की चनुतरी पर सो गयी थी। उस समादी रात में पण्टे की व्यति बड़ी ही भयावनी लग रही थी। त्रमंत्रः उसका कर्णभेदी नाद बन्द हो

गया और उसका स्थान एक धीमी कराह 'दो हो' ने ले लिया। वह <sup>कराह</sup> इतनी दर्द भरी थी कि में चौक पत्री, अनायास मेरे मृख से निकल पड़ा-'यह कौन 'धे धे' की ध्वनि कर रहा है "

'यह मेरी ब्विन है।'—में और अधिक चकित तथा स्त्रमित हो उडी। आंखें फाड-फाड़ कर अवकार में इधर उधर धूरने समी पर कोई भी दिखायो न पक्षा । मेरा इदय भय से कांच उदा, फिर भी मेंने साहम <sup>बटार</sup>

हर प्रस्त किया। 'तम कीन हो, कहाँ हां ?'

'में तुम्हारे मिर के अपर है, चीन देश का विशाल घटना है।'

'क्या कहा धण्टा ? अदुमृत ! तुमने मानवीवाणी कहाँ से पायी ?" 'समार में बभी-कभी ऐसी भी घटनाएँ हो जाती है जिन्हें देस कर मनुष्य अवस्थे में पढ जाता है। हवा नुमने कभी यह भी सना है कि किसी

चन्दे का निर्माण करने में पिता को अपनी पुत्री का बलिदान करना पड़ा ही । 'ব্ৰহনি ?'

'अर्थात् यही कि मृक्त सर्विम दालन का समय चानु के सार्थ <sup>अहि</sup>

विकास कुमल कुआय की मृन्दरी करना का रक्त भी मिलाया गया ।



\*\*

चटाई पर जा पहा । दु ल तथा क्षोभ के समें समें जांमू उसके क्षांज भिक्षां जन---आद पहुरी बार उसकी विद्या का परिहास हुआ था। काबाई न अपन तुनी पिता को देखा---उनका कातिहोत यका हुआ

अभू प्लारित मृत्र देला-ध्यंथा से उमका सुदय अभीर हो उठा, क्रांग क्षेत्र के अपन प्रमानfret at i'

रिता ने अस्ति भारी और अपनी इंक्ज़ोती बेटी को हृदय में हमां की एक बार फिर फुट-फुट कर से पड़ा । काजाई भी रोने लगी । जब श्रीप् हुई वम तब इजायू न उम अपने दुर्भाग्य की सम्पूर्ण कवा और गाव ही क्या

रानामा समानी । अन नर का नाई एक टक्र पिता क मुख की आर अपना रहा दिन

nra ma-विता का । मनुष्य का असफल्या व विश्ववित नहीं होना शाहिए। बाप किर मा प्रयास कार्रिय । ईव्हर दरा वृहे, बहु अवस्य इस बाद सहायती करवा। में ना अपन प्राथना कर्ननी ।'--बीर क्यान किर एक बार रता स्व शबर पार् बास्य का पावियो उत्तरन समा।

भ्य दल बाबाई या व महो । उपका नन्हां मा मन वटा शावता रही कि बहा के एका जोका किन नाम कि हम के बालबार में भी दिया की है ज हैं। हा बाद : बवानक इस उस पूरी का स्माप्त हा बादा का देह हैं। वहारा का वरहरों का कदारा में रहता वा और आयोजक भी एक प्रकार की भी । असी दृश्य काला न प्रमुख ही उठा ।

540 Ist. . - पूर्व कहा न में बढ़ कहा संभव कहार कर चल पति हुत पूरी के

काम तिका मनव वह बहर क जिंहर रहेको प्रत्या व मुवादक हो रहीकी, atte are can are are on on our ora for any first the



गत्प-सञ्जय देश्वर का नाम ले कर ज्या ही धडकते दिल से उसने साँचे में धानु झांगे कि उसके कानों ने एक बीन्कार मुनी 'पिताजी ! और कोजाई उसकी बीना क सम्मूख ही उस तरल अलिमय पानु घारा में कृद पड़ी। रिना पुनी की

बचाने के लिए भगटा पर उसके हाथ लगा केवल उसके पैर का एक पूर्वा । वह बहिन हारूर बहा गिर पहा । समस्त जनता अवाक् होकर उन अन्तराती घटना को दलती रही । इस बलिदान का रहम्य कोई न सम्बद

काजाई का अपने हृदय में रख कर में तैयार हो गया। पर वेरा जन्मदाना हु ल और साह से पागल हा गया और जब नक जीविन रहा <sup>वस</sup>

26

A77 I

भरे चारां आर फरे लगाता रहा । कभी-कभी दु ख तवा चोप म अधीर है कर बहु मुख्य बुरी तरह भक्तभार-भक्तभोर कर बजाता और उतने ही जब स्वर म 'काजाई, काजाई' बीयता रहता जब तक कि जह सा<sup>‡</sup> थड इर मॉल्ट डाइन्स निर पद्राता

एड दिन गाँव भर उसन पेडिड निवासियों का माने न रिया-वर् मुक्त बबाना रहा और आबाई, कोबाई तब तक पुढ़ारना रहा बब वर्ष हि उसके बाल गामक न उह सबे । बात काल वह सरे हो शीचे मुद्र ह गामी बाद बहुँ। परिवत हा सा की कराहा।

गणा-बीर अवातक दिर पच्छा धीर ध्वति में 'टल, टल' बीठ उठा, उनक में बुछ अम बुग बेडी प्रतीता करती रही कि बुह तब और बुछ <sup>बार्</sup> बारमा-नार वह मान्त वा मुक या और मने देखा, प्राची में नुवीरी

त रहा था।

37-22 FA ET B ET 1 44 }



नहीं देखा। उसने मुना पधिक वह रहे थे--- मारिपुत्र गृप्तचर है उन्हें मृत्यु-दण्ड मिलेगा। वे जा रहे थे उसी जोर, उन्हें बन्दी करने। बार्किश अधिक न रक सकी। उस घ्वनि ने उसकी सम्पूर्ण चेतना नष्ट कर दी। उसे प्रतीत हुआ मानो हिमितिरीट धारण किए हुए विस्व सम्राह भी सारिपुत्र की मृत्यु घोषणा कर रहे हो । उसके मुख वा स्वामाविक उन्लान न जाने कहाँ विलीन हो गया, उमना धरीर अवसन्त हो बला और जाने बढ़ने की शक्ति उसमें न रही । उसे प्रतीत हुआ मानो मेरा सम्पूर्ण छपीर निर्जीव हो गया है। 'मानव मेवा का द्रत धारण करने वाले मारिपुत्र गुप्तवर हैं।' रह रह

कर यह भावना उसके मस्तिष्क को मथने लगी। तब क्या यह सब बॉर्ग है, धर्म के आवरण में क्या वे राजनीतिक चाल चल रहे हैं। किन्तु उमना हृदय इमे स्वीरार नहीं कर सका । सारिपुत्र पर उसे धद्धा थी और विश्वान था कि तथागत के वे भनत अमत्य वाणी नहीं नहेंगे। तब स्था होगा? वह भयभीत हो उठी । समीप ही ब्रह्मपुत्र नद हर-हर करता हुआ रहेते हिमाच्छादित चट्टानो पर प्रवत्त वेग से आगे वढ़ रहा या । डावा का ध्यान उन पर था। उसे आज सम्पूर्ण प्रहृति निजीव और शृत्य प्रतीत हो दि थी। भविष्य में होने वाली सम्पूर्ण घटना उसे नेत्रो के सम्मूल स्पट दिवासी दे रही थी। वह देख रही थी जल्लादों हे बीच थि? हुए मारिपुत्र, तब अपने पिता को। उसका धरीर सिहर उठा ।

न शामन भी जनको नार नहीं उर सकत । आजिस्स का ल्या होती **हु**ई

चलना लोड आयो। उस प्राप्त शासाया। इस असर आल्माका गर्ह अपरानः। च अपना आस्पतः ५० । सम्बन्धः सः । उसने दुइ स्वरः में



हुई चिन्ति पुनः लौट आयी और वह उठ खड़ी हुई 1

मारिपुत के द्वार खुले हुए ये और दोनों सैनिक अन्दर ये। डाबा ने

दूर से देखा और प्रमन्न हो उठी । उसे निश्चय हो गया कि सारिपुत इन

मसय घर पर नहीं हैं। वह बढ़ी और द्वार पर जा पहुँची । सैनिकों ने दूरिट

उठा कर पछा---'कौन ?'

कपित कष्ठ ने उत्तर दिया---'धीत के कारण गरीर अवस्त्र होता

जा रहा है। बाहर वर्षा हो रही है। केवल इस भीपण वेला में विधान

चाहती हैं।'

अर्थ निशा में शीन से स्थानुत हुई बालिका को देश कर सैनिकों की

दया आर गयी।

वालिका भीतर गयी । दोनां सैनिक मदिरा पान कर रहे थे, हुछ ही

क्षण परचात् वे पृथ्वी पर विर पडे। और वेसुध हो गये। डावा ने सारिपुर

की आवस्यक बम्बुएँ उठापी और बीरे से बाहर हो की । उसने द्वार हुमकता

में बन्द कर दिया और आगे बढ़ी । वह जानती थी कि रिरापुरी के मन्दिर

के अनिरिक्त सारिपुत्र और गहीं नहीं का सकते।

बढ़ रही थी और पर्वतीय बाय उसके धरीर को येथे डाल रही थी। किन्तु

वह प्रथम थी। दूर पर उसने देखा एक पश्चिक साक पर जा रहा है। डावा ने सम्पूर्ण शक्ति लगा कर उसे पुकारा और रिशपुरी तक पहुँचा देने की याचना की। पश्चिक न उसे याक पर लाई लिया।

×

सट<sup>ा</sup> सट<sup>ा</sup> सट घ्वति अपने द्वार पर मृतकर घ्यान सम्ब तथागउँ र मक्त चौंक उठे । उन्होंने पूछा-- 'कोन ?'

निर्माय को उस भोषण विस्था सं जब सब हिमाक्छादित विस्तरी

विरुपरिचित मधुर कच्छ न उत्तर दिया---'मे हुँ।'

दूर पहाड़ी पर भरनों के मध्य वह मुन्दर देवालय स्थित था । वह मार्ग



की बाणी में क्षीम था। अत्यन्त कष्ट से उन्होंने कहा---'में मृत्यु से क

में प्रयाण करेगी ।'

अपने जीवन की रक्षा में नहीं करना चाहता।

होंगे। चलिये, बीझ पिता को सूचना देकर गुप्त पहारी मार्गों ने में आर्थ

चलिये ।'

ने समीप जा पहुँचे ।

उरता विन्तु तुम दोनो को विनत्ति में बालकर भेरी आत्मा अत्यधिक कर

'नहीं, आपको चलना ही होगा'—डावा की वाणी में दृष्टता थी।

साथ लामा शब्दग के समाप चल पहे।

नी लब्धता बढ़ती जा रही थी। बहापुत्र का भीषण रव हृदय को कृषित कर ग्हाया। उस अर्थ निधा में दुर्गम पत्रों को पार कर दोनों सन्दर

सन्दर्ग सानि पूर्वक सम्पूर्ण घटना मुनकर विचारमन्त हो गये। कुछ धण परचान् उन्होंने दावा की ओर मृत्य फेरा और उसे सारिपूत्र को गुप्त मान भ तिम्बत के बाहर पहुँचा देते का आदश दकर उठ खडे हुए। मारिपुत्र ने

मेघाच्छन्न पय अन्धनार की काली चादर में दका जा रहा या। रात्रि

भावी आपत्ति की सूचना देना आवस्यक जान सारिपुत डाबा है

'हट न करो बहन ! मुक्ते यही रहने दो।' मिरे इस अन्तिम अनुरोध की उपेक्षा मन कीजिये, मारिपुत्र, ग्रीप्र

'बलिये । इस भीषण बेला में गुप्त मार्ग पूर्णत्या सरक्षित होग !' 'पिता और बहन को खोकर मुक्ते जीवित रहने की इच्छा नहीं।'

निब्बत के बाहर पहुँचा दूरी ।'--शीधना करने हुए झवा ने कहा। सारिपुत्र उसी प्रकार निश्चल वैठे रहे ।

'भूव तक करने का समय नहीं । राज-प्रतिनिधि के सैनिक आते हैं

'यह नहीं हो सनता बहन, पिनु तुल्य शब्दम को भोर आपति में डाडर

'किंतु में आपको बचाऊँगो ! तथागत मेरी सहाबता करने ।'



वही धूमिल सध्या यो---मलिन और उदास । एकाएक डावा रुक गरी।

'बब मुक्ते विदा दो मारिपुत्र ! ' -मजल नेत्रो में डावा ने नहीं !

'हावा ..' सारिपुत्र का कठ अवस्त्र हो गया । वे आये नहीं कह छं। 'अब हम कोम तिब्बत की सीमा के बाहर हैं, यहाँ में आप निर्दिश

भारत पहुँच सकते हैं 1'-किमी प्रकार दावा से बास्य समान्त किया। 'न जाने जिन बुरे धणों में मेने तिन्यत में प्रवेश किया कि मेरे ही काण

देवनुस्य शब्दन और तुम. ' मारिएव का वाच्य उसके अध्यों ने पूर्व वर टिया ।

'सारिपुत्र । इस घटना से अपने हृदय का दस्य मन कीजिये। कट

ही मन्त्य की कमौटी है।' दोनो मौन थे।

कुछ क्षण परवात् सारिपुत्र ने बहा--'डाबा ! तुम्हारा स्नेह स्नी प्रकार सदैव मुक्ते पय प्रदर्शित करता रहेगा।'

कठ तक आकर द्वावा की वाणी रुक गयी।

'बब विदा दो।' कप्ट पूर्ण स्वरो में सारिएक ने बहा । उसके नेत्र स्वर हो गये। अथु वर्षा से वह धूमिल सन्ध्या और भी धमिल हो उठी। उमी

क्षीण आलोक में डावा न तथागत के उस प्यारी को विदा दी। श्वहरी पगडण्डियां पर जब तक सारिपुत्र दिखलायी पहते थे वह उसी ओर देखी

रही। अन्त में वह अस्पष्ट छाया भी सर्वश के लिए विलोन हो गयी। डावी ने एक दीर्घ निस्वास ली और लौट पडी।

× ×

पूर्व परिचित ध्वति सुन कर उसन मृख उठाया । स्वर्णाविरि हो उपत्यका में स्थित वही नेनवोरी जोनका मन्दिर था । नित्य की भारत उमके घण्टेकारव था। सब कुछ ज्यों का या वाकिल्तु वासल्य और उदान।



। भिश्क की बार्जें मृत उपस्थित लोगों ने से कुछ हम पह, कुछ मीन

110

रह मए और धंग सभीन नेते से करहारे की और देनने तनी पांदरें विकास स्थित में स्वाप्त कर प्राप्त कारार करते हैं—दिवारी परायने के ठीक उत्तर उन दिनों कर वहारों भी। न जनता में से उनकी और की देवा और न करवारों में हो किसी ने स्थान। यह देन पिशुक के अपने पर उस भूवन मेहिन मुस्कान की रेमा लिव गई से पांदर पुरा के मूँह लगी है तो उसे देवारों बना देवी है और वह नारों के अपर पर लगी है। जन नार्य कुछता कहाने लगी है। उसनेत जनवसूत पर उनी मुक्कान की मोहनी आपने वहना है। को जनवारों के अपनेत जनवसूत हम जी को कारा है। को जनवारों के मोहनी आपनेत जनवार हमें की कारा हम जनवार हम जाने की मोहनी आपनेत जनवार हम जाने की मोहनी आपनेत जान की मोहनी आपनेत जान जिल्ला है। को जनवारों कारा हम जानेत हम जानेत हम जानेत हम जानेत हम जानेत हम जान की मोहनी आपनेत जानेत हम जाने जानेत हम जाने हम जानेत हम ज

का माहना जावत हुए उनन कहा जब्दा अब वलना हूं। कावधार्थ जाकर तरिक कोतवाव का भी होमखा देल लूं।" [यो ] पोब की सम्या सिहरले लगी थे। दाल नमायों में अमीर जान नवाकर की स्वयुक्ति के जाने साह काले काले में स्वयुक्त स्वयुक्त स्वयुक्त स्वयुक्त स्वयुक्त स्वयुक्त स्वयुक्त स्वयुक्त

की दिव्य हुवेशी के दूसरे खण्ड वाले कमरे में तबका उनकने लगा था। दीवारो पर हमें दीति में दीपाधारों में मोमबतियां के गुल सिल पुरू थे। खिडकियों के धत्रवों में कूलों के गबरे लटकार्य जा पुरू थे। टेका, सार्यों और मजीरे की सहायता से अमीरजान पीलू पर 'रियान' कर रही भी—

'परीहा दे, यी की बोहत न बोहत।'' अभीरतान 'स्पार्थी' वमान्त कर 'बजरा' पर आ ही रही थी कि उसी गणी में हरूनक की आहर लगी। उत्तर देशा कि सामने की विवृक्तियों ने बेदमाओं का समूद बाहर एका निकार्त गती में वस्तुकाराव्य कुछ यें रहा है। अभीरतान औ उठ कर सिक्की पर स्थायों। उसने देशा कि हुई अभीहिंगों और निमार्थियों की स्थाय पेन लगाना मान स्वर पति से सी

रहा है। अमीरकान भी उठ कर सिरकों पर आयो। उसने देसा कि दूरें अपाहियों और भिगासियों को स्थय देस ल्हाता सम्म सबर गति से गती में समूह सिश्कुत क्या जा रहा है। उसके गीछ गीछ आदिस्पारी से सी भीक है। नगर को अभिद्ध सम्बन्ध से गोगानाल अपन अपन स्थार भी पर स्थी है परनु भितान जो दोग्ड मन्द्री से सकर गामन म गुआन है, उने अपर



गहप-मञ्जूष

. . . . . .

11.

नि (क की बाद पून प्राधिक लागा में में कुछ हंब पह, कुत्र मीत 'द गए बीर थाप बानाव नहीं व कनहों की जार बचने को। भीता बाक क नोबंग बानक मुख्यी बानाव करते हैं—बादानी दशाव के 'दि कहा को विस्ता कराया है

े हे जबर वन दिना के दहरी थो। न जनता में में उपकी और कोई की और न के दहरा में हैं किया न जोड़ता पद बंध कि दुक्त अपने पर इन पूर्व नोहें के पूर्वक की स्था मिन कहें में मूरिपूरा के दूसनारी है ना उन है की मार्च में है जोर जब नारों के प्रपूर पुर में की दें इन नार्य है ब्हर्स है है हो से पास है नाम बना का समझ कर मी करते

है तो पत्ती हैं हो। तो देश है और तक नारों के अदर पद मही हैं इन नार्य हुन्दर हरान भवता है। तमक्य नमानुह पर भी मुख्य हर्ग नोम्स करार्य हुए अस्त हहां मच्छा कर्म नहात्ती है। झान्सी इक्टरनक करार्य इस ना हीमहादम्ब नहें।

कर भवन कराबार का ना आगात कर छ। [श] चंत्र को स्थल गिर्दरन जना ना। वात महा य जनीर नान वंशाक

कर दिल्ल दुवरों के दूषर संख्य प्राप्त क्ष्मर म त्रवाल स्तवन देना प्राप्त दावादा एर दन होता. में शापनशरों ने नामगोलया के मुख्य स्वित में

त्रराज्यों के प्रस्ता ने पूरी के सबर उरकाई हा युव्व पा। देवा मार्गी शर नदीर की उरास्त्रीय बनारबान प्रकार रिमाय कर रही बीना गरहार में की बहुरा ने पुरस

ार हा र वा बंद बंदर न प्राप्त बन्देर हेन रथ हा समस्य बंद भूपरा दर बाही रहा वा कि ही कन्द वे हैंठनल बंद बहुर रहेंहा हुसन हुला कि मानन ब्रोट स्वादेद हैं है

. . . .

. . .

रेवने का अवचर ही नहीं मिल रहा है। सौदयं का यह अपनान उने सहन ने हुंबा। वह स्वयं भी नगर की प्रतिद्ध येरवा भी। उनके रूप की तृती केंडगें भी। मुर ने उने असुर की शक्ति दे रखीं भी और तान ने उने रीतन बना रखा था। इन्हों दोनों के उल वह हुदयों पर आधिपत्य जनानी भी और उनके सारे रस का शोषण कर अन में उन्हें बरबाद कर देती।

अधि को तरह उतने भी भिश्चक को देता, औरो ही की तरह वह भी
उन्ने कर पर मुन्य हुई किल्नु यह देत कर यह औरों ने कही अधिक हुती
हुई कि अधिकयों मोलवाली, उतको मुख्यान का मोनी, भिश्चक की गयन
भीनी में न गिर कर सडक को भूल में लोड रहा है। और औरो ले वह कर
उनने काम भी किया अर्थात् परमीने का सरदती माल अपने उत्तरे से
उतार उत्तने भिश्चक के उत्तर उत्तल दिया। भिश्चक ने माल नीचे सीमने
हुए बीक कर तिर उत्तर उद्यान। अमीरबात से उत्तरे बात और्य हुई।
विकास मर्व से भरो सुरी की भार बीतो तीली नहीं। भिश्चक ने नियाना साथ
कर अपने हाथ को हर्यों पैसी से मरो भीनी अपर उसली और यह पूरे
जीर से अभीरबात की नाक के तिर पर तहाल से बा देंगे। उन्नहीं नाक
से रस्त उपनने लगा मानों दिसी लक्ष्मन ने पुनः विभी मूर्यम्या को
सरस उपनने तमा मानों दिसी लक्ष्मन ने पुनः विभी मूर्यम्या को
सरस उपनने तमा मानों दिसी लक्ष्मन ने पुनः विभी मूर्यम्या का
नातिका सेरक किया हो। भिश्चक उद्या कर हैंस पहा।

टोक उसी समय बगत की मस्त्रिय से एक कर्य, कुरूप और बूड़ी भियापित बाहर निक्सी। यह संकड़ी पंचर स्था पंचाना पहने थी। उत्तरा कुरता तार तार हो रहा था और बादर के नाम पर उनके पान एक बीधडा मात्र था। उसने भी बेरसा मिश्रुक बास्ट देखा। उसके मूर्तियों से भः योग्नों मूंह म एक विधित्र ध्वांत निक्सी दिखे होंसी भी बहु सकते हैं संभी भा हाथ का नाउंद्रा पर सारंग का नारा भार दक्त बहु तन मई कार अपना । 3 करांद्रा म सिक्षक का विद्यक हुए हुई बार्टी — बारा पहुँच चुडो थी। सभी उत्पृक्त थे कि देखें, कोतवाली वन कर कंगी निरटों है। भिक्षुक के बन, और बोबट, सहब कोसन और साहब बात, दुस्सी नी नियुचना और समीत की साधना आदि का हान बनारम का

नीत म चरवर वृद्ध का कामा पर जमानजान का साल डाल का गूल करने में दुआ तक न दे पायों थी कि मिसूक आगे बद्धा । ...जोर कोनवाली आ गई। मिसूक के पीछे चलने वालों की सस्या अब तक हुबार के उत्तर

क्सा बस्ता बातता था। साथ हो नये अवेजो राज्य के बातर कानूनो की दुरबहीन पाउरी का स्वार भी काशी की बता को अव्य मध्य के ही निव मुक्त था। उस बताता का पूर्व विस्तात था कि आज अस्पूत्र विराह भी रो 'अर्थान देशियों देशत बोगू' जैंगी कोई बात होकर ही रहेगी। इस्ताय है ही सम्पायनीन काशी के नागरिकों की उत्काज जाग नधी थी। पापु वस नोहदानी साधने आ पढ़ी तो कोरे तमाधनीन वनरातने लगे, बागर जिनागते लगे। वर्षमान चीक थाने के मामने जहां आज समाचित वाई होगी है, एक कुआं या और कुएँ के चुहरिक बेदान तत्वलानेन काशी में बोकरणे, कवालू की एकमाव हुकात निवस भाग, उसी कुरों पर जगरी। आने के

रिताय ठीक सामने महक की पटरी पर कोतवानों थी। प्रिश्तक ने कुएँ की क्रमी काल पर यहें हो बोतवानों की ओर मुंड वडा कर जावाब लायों — "तुनूर कानवाल सामब" फिल्क ज्यादी पर आया है। बचा हुक् होता है।" वताब जावद सामद । सन्त नता नता और दो एक बरकदाब, जा



बैसी बोसो से अधुरम उजीवते हुए गद्दद रूप्ट में पूछा था—'स्या गौरी की तपस्था जब भी पूरी नहीं हुई।' और तब यह उसे पहिचान कर पुत दूसरी रात आने का बचन दे बैठा। तभी से उनके मन में एक ही प्रश्न

पत्तर काट रहा था कि क्या त्यांनी हुई बस्तु पुनः बहुण की जा सकती है! मंगलागीरी उसकी पत्नी थी। परन्तु उसने उमका मन्द्र जीवन में दो ही बार देखा था। एक विवाह की रात और इसरे क्षेत्रह बर्च बाद फिछी रात। निधुक ने अलवर के एक ऐसे चारण कुछ में बन्म हिया वा विमकी बीविका का साधन कहरवा-पाठ न होकर अखि सचालन था। उसे जन्म

में ही व्यामाम और रास्य सचालन की शिक्षा मिली थी। तेरह वर्ष की वय में उसका विवाह जैसलमेर में हुआ। स्वसूर राजस्थान के प्रसिद्ध नारण थे। किनने ही राजाओं ने 'लाख पमाव' र और 'कोड पसाव' र में उनका सम्मान किया था। उत्तर बयन में उन्होंने नाथद्वारा जाकर कण्डी वसवा ली थी। उसके बाद ही कन्या के रूप में उनके घर में प्रथम मतान में जन्म किया। कन्या पिता के अस्ति की पुतली हो गयी। जन-

जाने ही पुत्री पर भी पिता का रम चढ़ने लगा। पिता पूजा करते और पुत्री मोविन्दलाल की प्रतिमा के समक्ष नाचती हुई तोनली बोली ने याती--"मै तो गिरिघर आगे नाचु रीं।" भिञ्जूक को विवाह की रात की यह घटना याद आयी अब साउपही समान्त होने पर ससुराल की स्त्रियों ने उसको कविता और दोहा सुनाने के लिए कहा और वह मौन रह गया था। कारण तब तक उसे अपना

\*राजस्थानी नरेपों के पहाँ प्रथा थी कि वे किसी कवि या चारण की सम्मान करने के लिए हाथी, घोडा, भृमि, हथियार राल आदि मिला कर उसे ३० ४० हकार रूपये की रक्स दिया करने था उस ही लाख पसाई

और कोड पमात्र कहते ३--मिराइये---रक्षप्रमाद कोटि प्रसाद।



जल रहा या और भूमि पर बायम्बर पडा या । उसी पर बैठ गांजे की अभी तक वह इस प्रश्न की मीमामा न कर पाया था कि जिसका रवान कर दिया उमका पुनर्प्रहम उचित है या नहीं, विधि और नियेक

दोनो पहलु उसके मामने जाने ये। त्यांगी हुई बस्तु उन्द्रिष्ट है। मानी उने ग्रहण नहीं करने । नारी माधना पद का अन्तराव है, में माधक हूं। पून दूसरे ही क्षण वह सोजता--'गोरी मेरी महधामणी है। वह जैसी नृत्दरी है थैसी बुद्धिमती भी। उसमें मुक्ते कर्तव्य पालन में सहायता ही

मिलेगी। उसका मंने पाणिप्रहण किया है। में उसे बचन दे आया हूँ। वह मेरी प्रतीक्षा करतो होगी। प्रस्त के इस सामाजिक पहल ने निर्णय कर

दिया। यह अभिभव सा धीरे-धीरे खोड के बाहर निरला। एक नाव ओली। उन पर बैठ उसने उसे घारा में छोड़ दिया और स्वय भी विचारपारा में बह चला। उसके हाम मन्त्रवर् नाव संते रहे थे। वह सोच रहा था कि परि बहु न होती तो खिपाही मुक्ते अधस्य पकड लेते। में लायी हाथ भका भौदा और पैदल था, वे श्वियारवद, घोडे पर मुबार थे। न जाने रूने पहचान लिया दुष्टो ने। अलीनगर से नटेसर तक क्षारू मारा। पर उन्हें भी पना बरु गया होगा कि आब किमी से पाला पता है। सब तो पीछे बहु गये, परन्तु यह ससरा हुबलदार, उसने अत तक पीछा न छोड़ा। नाय विनारे लग गयी। भिक्षक उस पर से उतरा। रेती में खुटा याई कर उसने नाय उसी में बांध दी और स्वय गाँव की ओर चला। भीकी चौदनी में शुवाल बदमा की ओर मंह उठा उठाकर चीतकार कर रहे ने। गाँव में पहुंचने ही कुत्ते उसके पीछे पीछे भूकने चले। मगलागीरी के आंगारे के सामने पहुँच भिक्षक ने देखा कि ओसारे में काठकी चौकी पर बैठा वही हबलदार मुखे पर हाथ फेरना हुआ। यह स्वर से रामायण की चीपाइयाँ

दम लगाने हुए वह विचार करने लगा।

११६ के किनारे स्थित अपनी मंद्री नुमा खोह में प्रयोग किया। दीवट पर मृत्युदीप

गम्प-मञ्जूष



'अच्छा ! '—गौरी ने विस्तम का अभिनय करते हुए कहा । 'अष्टा बया ? नोचा या तुम्हें भी साथ लेती चलूं। विडसी है

नीचे सही होकर कितना बिल्लाची। रोज तो तुम चार बजे भीर से ही उउकर क्या क्या गाया करती थाँ । आज तुम्हारी आहट ही नहीं मिली। हो, यह गीत तो गात्रो, जीजी, ! "म्हाने चाकर राखो जी, विर्षारी लाला! "गेंदा ने बहा और यह जिल्लिकाकर हैंगी फिर तत्काल स्वत

होकर बोली--'अच्छा जीजी, ये सब गीत तुमते सीचे कहाँ ?' अरहुउ गेंद्रा प्रश्न पर प्रश्न करनी जा रही भी, विना यह खवाल किये, कि उत्तके प्रश्न गीरी के दुश्य पर हथीड़े की बोट कर रहे हैं। फिर

गौरी ने कहा-- 'इसमें बनाने की क्या बात है ? मेरे बाप भी गोविंदज क के उपासक थे न । उन्हों से यह सब सीला है । उनके गोलोक धाम जाने पर अब दायादों ने मेरी सब सम्पत्ति धीन ही तो में अपने मामा के पात चली आयी। माभा ने जब काशी राज की मेना में नौकरी की तो में नौ

यहाँ चली आबी ।' 'अच्छा एक गीत गाओ जीजी ! मुक्ते बडा अच्छा दगना है'---पेदा ने यहा ।

'इस समय जिल ठिकाने नहीं है, येदा ! फिर कभी गाऊँगी।' 'नही, मेरी अच्छी जीजी ! दो ही एक कडी मना दो --- पेदा ने बच्चो की तरह मचलते हुए कहा। अन में गीरी को गेरा के हठ के सामने भूकना पडा । उसने शन्य गय्या की आर दल बनगनाना आरम्भ किया-

एको में ना उरद-दिवाणी मार्ग रहते से जीव जाय । नती अपर नज विद्या को स्दर्भागा स्वास्त्र स्वास्त्र



## ---

and the second of the second of the second k = - in - k = ne + s f = 2 f k of ok the girk and the property of the mark the country of the country of

THE POST OF THE POST OF THE STREET STREET 2 2 + if material waster as property. construction of the property of the second

the total and the state of the test of the second second a time dick of the first that the tight

一大声 随来的 生硬织化 保护证券上提出。 The state of the second of the state of the state of

at in the state of its said offer



ऐने बम्बू कार्ट बाजों के बीच में होकर एक जहना और एक लड़की

१२४

चीक की एक दुकान पर आ मिति । उनके बादों और इसके और नुषते में बान पहला या कि दोनों निख हैं। वह अपने मामा के देस दोने के निवे दहाँ लेने आपा था और यह रसाई के लिए प्रतियों। इनानदार एक परदेखी ने नुभ रहाथा, जो नेर भर गाँठ पारती की बहुदी की मिने दिना हुना

न भा 'तेरे घर वहाँ हैं ? समेर में"---और तेरे <sup>9</sup>

"मार्के में"--यहाँ बढ़ा गहती है "

'जनरसिंह के बैंडक में, वे मेरे मामा होने हे ?"

"में भी मामा के यहाँ जावा हैं, उनका घर वह बाबार में हैं।" इतने में दुकानदार निवटा और इनका मौदा देने तमा। मौदा तेकर

दोनो माय-साथ चले । कुछ दुर वा कर लडके न मुनकरा कर पुछ---"वेरी 'कुडमाई' हो गई ?" इन पर लडकी मूछ असि चड़ाकर - पर

च्ह्रकर दोड गई और लडका मुंह देखता रह गया । दूसरे, तीनरे दिन सम्बोबाने के यहाँ दूषपाल के यहाँ, अस्सान

दोनों मिछ जाते । महीना भर नहीं हाज रहा दा तीन बार लड़के ने किर पूछा, "तेरी कुत्रमाई हो गई ?" और उनके बबाद में बही "बहु" किया। एक दिन जब लडके ने बैसी हो हंसी में बढ़ाने के लिए पूटा तो लड़की लड़के

की मभावना के विरुद्ध बोन्धे- हो हा गई।

कलंदलाने नहीं यद रससास कडा हुआ। साउ, एउकी भाग गई। त्रद्रक्त प्रस्थारक वा । चस्त्र संपक्त अत्कक्त माणा संद्रकेत दिन्छ। अंत बाब गंबार का दन भारता सभा, न्याद पर कुल **पर परमर** 

माणा और एक वासीयार करा जाउस एक दिस्स मा**मने नहां कर** 



"नहीं तो मौथे बलित पहुँच जाते । बयो ?" मुबेदार हुवारानिश ने मुनकरा कर कहा, "उडाई के मामले जमादार या नायक के चलाए नहीं बाउरे । बाहे अक्रमर दूर बीद्भांचने हैं । तीन भी मीठ का सामना है। एक

तराह बढ़ गए तो बया होगा।" "मुदेशर जी, मन है," लहतानिह बाला, "पर करे बंधा ? हरिहाम-

प्रदिक्षा में जा जाड़ा पंग गया है। गर्य विकलता नहीं और खाई में दोना नरह ने चन्द्र को वाविष्या केनी मात्र कर रह है। एक पादा हा जार ता गर्नी भा आप । ' उद्देशी, उद्धानिक साम का के ब्राप्त । बजी सामुख भार जन्ने साम्बद्धियाँ

केंद्र लाई का पानी बाहर पढेहा। महानिह बाम हो गई है, खाई के दरबाज ना पहरा बदक देशा।" यह बहते हुए मुद्रदार मारी गाँदक में तक्षर जगाव छन्। वजारानिह पुरुष्त का बिद्युक्त था। याग्दी म गाँउथा पानी भर

कर लाई क बाहर फाला हुआ बाला--'में पारा जन गया है करो बर्नेती के बादमार का तथम । इस पर तथ दिए विकास पर और प्रदेश

TEATRE A PROPERTY AND THE TOTAL CAN ST.

1 . 111 . . . . . .



[ ] ]

दो पहर राज नई है। अधेरा है। सम्राटा छाया हुआ है। बोधर्मिह लाली जिससूटो के तीन टिनो पर अपने दोनो कम्बल बिछाकर और ल्ह्ना-भिन्न के दो कम्पल और एक बरान कोट ऑडकर सो रहा है। सहना-गिह पहरे पर खडा हुआ है। एक आंख नार्डि के मुखपर है और एक बोप-मिह के दूब के शरीर पर । बोधमिह कराहा ।

"क्यो बोधमित्र भाई, क्या है ?"

"वासी विता हो।"

लावानित ने क्टोरा उनके मुँह ने लवाकर पूछा--"नहां कैने हो ?" पनी पोकर बोधा बोचा-- "करेंग्ली पूट रही हैं। रोम-रोम में तार दोड रह ह। दोन बज रहे हैं।"

"अच्छा मेरी करगी पहल छ।"

'ओर तम ।' ं सर पास निगडी है, और मुक्ते पत्री लगती है, पत्रीता जा रहा है।"

"ता में नहीं पहतता, जार दिन से तुम मेरे डिए--"

"मेर पास दूसरी सरम अरमी है। बाज सबेरे ही आई है। विरायत न मन ब्त-ब्तहर भेज रही है। एठ उनका भारत करे।" या कहतर लहुना जाना कोट उनार कर जरनी उतारन लगा।

'सब करत हो ।'

और नहां न्द्र ' या कन्नकर नाही कहत यापा का उपने अवरदर्भा बरमा प्रशादा और बाग, जाका होर, और बान हो क्रेडी

38 TYMER (87 11 - 45 84 - 41 420 4 44 443 E# . 1



"लडाई सत्म होने पर । क्यों, क्या यह देश प्रमाद नहीं "

"नही साहब, शिकार के वे मजे यहाँ कहाँ ? याद है, पारसाय नकने लड़ाई के पीछे हम आप जगापरी के जिन्ने में शिकार करने गये थे '-

"हाँ, हाँ"—"वही आप अब लोप पर संघार थे और आप का साननामा

कही का "- सामने में वह नीज गाय निकड़ी कि ऐसी बधी मेने कभी न देखी भी। और जान को एक गोलो कथे में लगी और पृट्ठे में निक्रणी। एसे अफनर के माथ शिकार खेळने में सबा है। क्या साहब, शिमले ने वैपार हो कर उस नोजवाय का सिर आ गया था ने ? आपने कहा था कि रोजामट ही मेम में रागायेंगे । "हो, पर मेने वह विलायत भेज दिया"--"एने

"हो लहनामिह, दो पुट चार इच के थे। नुमने सिगरेट नहीं पिया ?" "पीता है साहब, दियानकाई के जाता है"-रहकर व्यवसासिह सदक भ पत्ता । अब उने मदेह नहीं रहा था। उसने अध्यद निरुच्य कर लिया

"हाँ, प्रयो लहना? क्या कयामत आ गई? जरा ओख रूपने दी टोती।" [ ¥ ] "होश में आओ। कवामत आई है और लपटन साहब की बर्दी पहनकर

"लपटन साहब या तो मारे गए है या कंद हो यए है। उनकी वर्दी पहुतकार यह काई जमन आया है। सबदार न इसका मुह नहीं देखा, मैंने

टकरायर ६

अबद्दरता रास्ते के एक मंदिर में जल बढ़ाने को रहगया था।" "देशक पावी

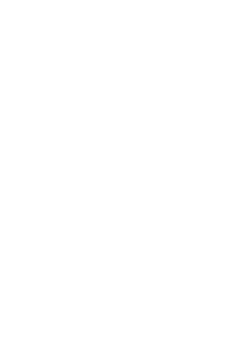
बड़े-बड़े मीग ! दो-दो फड़ के तो हाये।"

कि राम करना चाहिए ? अधिरे भ किमी मोनेवात स वह

बाई है।" "ant ?"

"कौन वजीससिह?"

"नयो साहर, हम लाग हिन्दुस्तान कब बार्वये ।"



पर दे मारा और माहब "आह ! भीन गोड़" बहते हुए बिल हो गर्भ।
लहनासह ने तीनो गाले बीमनर अदक के बाहर फर्ड और साहब का
पर्माट कर मिनको के पास दिशाय प्रथा की तलाओ दी। दीन-बार
निवाके और एक बायरी निवाद कर उन्हें अपनी अंब के हवाले किया।
साहब की मर्छा हुई। लहुन्तर्गत हम कर बाला, 'क्या लपटन
गारव ! मिजाब कैमा है। आज मने बहुत बाद मोखी। यह सीखा कि
मिल निवरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधारी के जिले में नीठ गावे
हाती है और उनके दो पूट बार इब हो सीम होते हैं। यह सीक्षा कि मूसक-
मान बानमामा मनिया पर बल बढाने हैं। और छपटन साहब सात पर

USA-NEWS

232

का वा--

चढ़ते हैं । पर यह तो बहो, ऐसी माफ उर्द कहा से मील आये ? हमारे लपटन

माहब तो दिना हैम के पाँच छएब भी नहीं दोछ सकते थे।" लहना ने पतलन की जेबा की नुसाधी नहीं लो थी। माहूब ने भानी

प्राहे में बचाने के लिए दोनो हाथ अब में दाले।

लहनामिह बहुना गया- चालाब तो बडे हो पर मान्द्रे कालहुना देवने बरस लपटन साहब के साथ रहा है उसे चकमा देने के लिए भार असि बाहिए। तीन महीन हुए एक तुरकी मोलकी मर गांव म आया था। औरती

क बच्चें होन की नाबोज बांटता था। और बच्चा का दबाई बांटता था। बोधरा व बण्य नोबे सक्षा विद्यान रक्षा प्राप्ता रहता था और वहाँ श्रेरताचाति जमनग्रास्त्र वर्षान्तः वद्यवक्तः सम्मासः विभाव

चंद्रान का विद्यारण गांका कर कर कारचा हाइक्यान माना जायग्र⊟ाना " र प्रदेश है। इ. र प्रत्ये र प्रश्नामा याकि

किसीनसंस्य । । । १ १ । १ । १ । १ वर्ष

हत्वराम सी ना ना साम साम हा दो दी है।

atenta e a la compansa de la compansa que la c



यस्य-सङ्ख्य बन्द को तरह लगट निया। किमी का सबर न हुई कि लहनामिह के दूसरा पार-भाग सार-लगा है। नदाई के गमय कोई निकल आया था। एमा घोट बिग के प्रकाश संसम्हत-वाज्या कादिया हुना 'दायी' नाम गायक हाता है। और हवा

136

एती बन रही या केमी की बाणभट्ट की भाषा म 'दतवीणीयदशासाय' कटुकारी । वकारामित कत रहा वा कि वेग पन-मन भर फान्स की वृत्ति बर नटा व ब्लिक रहा है थी अब में बीरा-बीड़ा मुख्यार के बीछे वया था। मुख्यार व्यवसीयह म भारा हाल युन, और कामबात पाकर व प्रमही

तुरत-वृद्धि को गराह रह ब और यह रह थ कि तु न हाना ना आहे सब 417 417 4 इस उबाई का जानाम नीन मील दाहिनी बार की लाई पार्य न मुन ना बा । उन्होंन पाछ उन्हारत कर दिया वा । वहाँ व भटनड दा बीमार

दान का महोदयी करी, बा काई दह घड़ के बन्दर-अन्वर बा गईवी। वीन्दर अभारतान करहान वा अमृदह हात हात वहीं गहेब जीवत । इसी दहें मामुनी पड़ा बाप बर एक बारी में बायल जिटाय मय बोर दूसरी में कार्य राजी गई।

मक्तार के दिनतीयह का बीच में पट्टी कर्रवामा बाही राजर प्राप्त वह बहेकर रा व दिला कि बादा पांच है सबर देखा बागगत । बार्यातह अबर में बर्स त्यां का बढ़ नाश व दिलायां क्या । अहना का आवद्दर स्वदार देनी est 4 28 54 5541 4 821-

. . . . . . .



## क्रय-विक्रय का भादर्श

श्री व्याशंहर दुवे ' दक्षा भारत, बढ़ वृज्ज जादगी जो 'पोरं-पोर स्टब्लता हुजा जा रहा है, जनव रहा कोल है ?''

याचा न मोहन व पूछा। नाहन व वनाव दिया-स्मेता नहीं जानता वाचा । पर पात महाराव

काई जना विधानना रचन है, जिनक जातन की मुख्य जायस्यानना ही हा है बाना-च्या दुवार नगर के गोरब है। हलकामा और यम्बई जैया नगरी मा इनका करा करी रकान है।

पटन है। मार अशान उपको एवं नाइह। कोई एमी बान बेनाइप्रीयान उनको नरननो पर प्रदास पड़। परवाननी टिस्टम्नी। उन उनकी अवस्या मण्ड पन मुद्रारही

चाराज्यारि हिंदर मृत्ये । तेन देनहीं अवस्था मागर वस में ह्यार है। रोहन बढ़ है चोहद भये हैं में ती मन छोट व हातपुर भाग प्राय की देरह हैं चन मनदे हनहें होने करों होची में ने बार में हेदल गई

बर्ग्ड हे. देन समय देनक राम करों को हो को न देश भगव में क्षेत्रन गर्छ रोट होने का काइन की कर न एक है है। यह एक हार का हार नहीं

. . . . . .



गहप-सञ्चय

240

उमने पूछा—-नाज दतनी रातः को मोने के बजाय रोते नयो हो रामधन ? पर रोमधन हिंबकियों मार-मार कर रो रहा था। कोई जवाब वह उस उमम कैसे देता ?

आयन्तुकं ने किर पूछा—आसिर बात क्या है राज्ञपन दुछ नो बताओं।

शामपन ने तब अपना मारा दुल-मूल उन दूकानदार से कह दिया। दमका कल यह हुआ कि दूसरे दिन से उसे हलबाई की दूकान छोडकर इस नमें स्कानदार के ग्रही नोकरी मिल गई।

नमें दूकानदार के यहां नीकरी मिल गई। अर रामधन को गुरुरे की अपेशा हुए आगम था। यह दूकान किया एक भीन को नहीं, बल्कि बहुनेरी भीजों को थी। पेटेंट माबुन, तेल, कथा, केंगी, आत दुवरेन्ट, बच्चों के समुन्नारत के बिनाने, एडिया, एगे, धीया,

केंबी, अब, दूबरेट, बच्चों के तरह-नरह के विशोवे, छाड़ियों, छाड़े, धोमा-बाव के प्लेट्स, करूम, दबात, स्वाईं, फाउटेन, मीमे के विकास, यूट की पालिस, फीने---नाव्यं यह कि दैक्ति स्ववहर में आनेवाची मैक्सो बण्डुबा को बहु दक्ता थी। एक सार्य में करी, ती करूम होगा कि उससे दनानार

की वह दूकान भी। एक घाउ में कहें, तो कहना होया कि उसके दूकानकार जनरल मर्बेब्ट थे। यहाँ रामधन को केवल आध्येट भोजन नहीं, बरन् नकद दब कपने मिलने से। साने के लिए दूकानवार ने एक होटल में प्रवास कर

दिया था। बस्त नकरत पर रामधन उम्र होटनवालं की भी कुछ मेवा कर देंग और इस कारण बढ़ उस रामधन में (श्रीव व्यवे) ओजन का स्थान माव ही खें लेता था। दूसन पर उसे मदेरे इस बजें से रान के ती जे उस् रहना पहना। अब बढ़ मुझी हवा से मीन के सकता था पूम महता था, और अपने मीनवा के मानवा से से हाथ करना था। कमी-मों होटन से

आनवान बाबजा में उस कुछ पैग भा उनाम के रूप में मिठ जाने थे। और इस नगर बरण्यांच राम महान कर बरण्या क्वा रहा था। किन्दु रामक्षर राजक वह का प्रश्नावन एना वा क्रिस हम अपन पैग

किन्तु रामधन हा अब प्रश्न कर दूर आवन एना वा विश्व अम्म अपने पैरा वहां जान पारंच बनन हा १८८ ४४८ ४४ ४४४ १ १ एका में रामधन



185 गत्प-सञ्चय पर पर अपना जो बहन बरबाद करने हो, ब्दो न उनको राजि-पाठगाणा में

विताओ। अभी पद लोगे तो बहुत अच्छा होगा। बन, फिर बचा था, रामचन रावि-पादशाला में पहने लगा। इसी तरह दो साल और बीत गर्न । अब रामधन को वेतन से १२।

मिलते थे। ७ । महीने की बचन वह अब उसमे बराजर कर ही रहा या। इस तरह कुल मिलाकर अब उसके पास लगभग पोच सी रुपये ही गये वे जो मेजिन बेक में उसी के नाम से जमा थे।

उन्हीं दिनो जगत बाबू का एक मकान बन रहा था और उस मकान में उनका मारा रुपया छन चुका था । आहे के दिन थे, माल करीव-करीव चक गया था। और नया माल मंगाने के लिए अब उनके पास और रुपये

नहीं रह गये थे। मोच विचार में बैठे बैठे वे इनने उदाम थे कि चितामार उनकी मुद्रा से स्पष्ट भलकता था। दूकान बद्राकर जब वे घर चलने लगे.

नो रामधन ने पूछा--बाद श्री, अगर आप मुक्ते माफ कर हैं, तो में एक बाउ पुर्व ? आप आज किमो चिता में दुवे हुए जाने पहते है । जगत बार--लेकिन तूम उस चिना को दूर नहीं कर सकते।

रामधन-लेकिन बाबू, कुछ मालूम भी तो हो । मंने आपका बहुउ नमक खाया है। अवर किसी काम आ सकूं, तो आप मुक्ते उसके मीके से

दूर इयो रक्षते हैं? जगुन बार---नुष्ठ रुपये की जरूरन आ पड़ी है। इकान में माल इस कदर कम है कि अगर एक हजार ध्यम का और इन्तजाम न हुआ, तो दूकान उटा देशों पहुंगी । उसके बाद क्या हागा जहीं सोचना है । बाई तो मकाने

क साधार पर कब मिठ सकता है। पर यह बात है हिस्सी बहुब्बदी की कि सकान पूरा बन भी न अभ और उस शिरवी रखन की **नौबन आ आये** ! प्रमानवर महिक्र साहा हजार का होगा। बोर्चा शाउसे उत्तरवाहर

ह नापण का सानि सगडानी है। क्या करू नयान करू, **कुछ सम%** 



## गल्य-सञ्बय

जगनवार् बोटे-मेरी मृहिची ने कल रात में पहा या रामधन का

588

रपया बहुत फलता है। इस साल जिलता लाग हुआ उनना कभी नहीं हुआ या। इसने तो जन्छा है, इहात में उत्तका एक धात का हिल्ला कर दिवा हो हो में ते तो कर साल को स्वास्ति हुई है, उनके तुम्हारे दिस्ते की रजन हो हो में के लगतम होती है। चोच भी तुहारों में पूर्वे है, वह समये अपन है। कुल निलासर 300 है होते हैं। ये एसमें या तो तुम मुस्तत तन के हो.

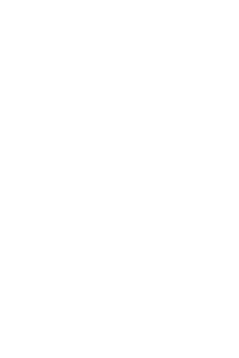
या दुसान के हिम्मे के रूप में जमा रक्ष्मो । मोहन इसी समय बोल उडा---उस दिन से रामपन जनन बारू की

इकान में एक आने वा हिम्मेदार हो गया। भाषा----रेडिन रामधन की उमित का यह दृतिहाम तो अभी प्रस्त का ही है। दशके बाद वो उसका अगाधी विकास हुआ, उसकी कवा भी कम रोचक नहीं है। गरिट का यह शक बड़ा विविच हैं। तिभी के उत्पान

के माय किसी का पतन सिधिन है, सकता है, कोई मही जानता 1 करता बानू एक लिंद हम असार सवार को छोड़कर चलते तो। ओर तब र हुस्से, उनकें ने बच्चे, तो असी पढ़ हो रहे थे। दुख्यमून तो जीवन के माथ करी है। किन्तु इसक्यक हो अपनी सहित ने भक्ता हो रहा है। बता आबू की मनुष्य की पहुंचान जी, ने मामज की विकासकि प्रदिश्त हो। बता आबू की

नपुन्न का पश्चान था, व नामध्य का पश्चान का दा, उनके बड़े कड़के, वो मंपिरित में । चल्यु उनके हें,हास्तान के बाद, उनके बड़े कड़के, वो यूनिविद्यानों में पढ़ रहे में, रामध्य में परिचित्र न थे। हुछ आबारा दोसों में उनके नान मर दिये। और उमस्ता फल यह हुआ कि रामध्य को उनका हिस्सा देकर उन्होंने उने दूनान में अलग कर दिया। यह सब कुछ हुआ दिन्तु नामधन के हृदय में कोई अन्तर नहीं आसा या। इसन में अलग होकर उनने अलग दृहान गो कर थी, पर

यह मस कुछ हुना किन्तु रामधन के हृदय में कोई अन्तर नहीं आसा या। इसान में अलग होकर उथनें अलग इकान तो कर धी, पर कान बाव के पीरवार के प्रति उसकी अद्धा ना भाव अब भी कम नहीं हुआ था।



ही चुका, यह हो चुका। जनका उपयाम ना आदमी भमव आने पर करेगा हैं। चाचा—एक दृष्टि में नुस्हारा यह बहुना ठोक है। पर प्राप्त होंडा यह है कि कोम अव्यक्ति काम में होने बाली एकम को अपने निमी डॉन

यह है कि छाम अर्थाभक लाभ में होते वीको एहम का अपने निर्मा निर्मा भीग में छाते हैं। किन्तु रामधन ने ऐसा नहीं किया। उतने उस रहन की असुआ का मूल्य पटने के सकट करे कि लिए मुरीसन रक्ता। मीहन-अक्टा किए।

भावा—उन्नरी दूरान इस बार के लिए भी प्रसिद्ध थी कि एक तो उसमें भाग विश्वद्ध और नया मिशता है, दूसरे भावनाद करने की आन-सनता नही एकरी. वस बच्चुओं का दाभ निश्चित है। कोई भी स्विट्स पाठे यह बच्चा हो हा, ज्या जात्व, दामों में कोई अनस्त होता।

मोहन-अच्छा, माना कि एक विशेष कोष के सब्ध में उनने एक नता प्रतीम किया । लेकिन इमका परिषाम आस्तिर क्या दूआ ? वाचा-परिषाम यह हुआ कि कुछ क्या के बाद कब क्लुओं का मूह्य बरावर पटने जगा, तब उसके गमान कुछ अन्य प्यक्राधी तो पार्ट में

आंकर समाप्त हो गयं, किन्तु रामधन के स्वत्याय पर उसका कोई वियोग प्रभाव नहीं पढ़ा । मीहत----वरण, ठोक हैं। किन्तु यह प्रभोग उसे मुम्ह किस सरह ? बाबा----वार यह है कि रामधन अब हतना समर्थ हो गया पा कि उन्होंगात की जारीन बारों के सुध को सम्बन्ध सम्बन्ध था। उसका अस्वतर्ग

चाना—जान यह है कि रामधन वह राना नमये हो गया या कि प्रश्नीशत्र की वार्रीन वार्गो के गये को गयक सनना वा। उत्तका अच्चन व्यवस्थ वार्गि था। एक बार उनन कियो अध्यासको से मानीवाद में स्थ-विकल के आद्या न नवथ में बहुन्तरी बात जान ना थी। अस्यर अले पर उत्तम उत्तका प्रशाम किया जार उन मकलना मिली। और प्रश्नी वर्ष्ट वे रामधन अराम करन-करन आज दिन तथा। इसी र्याचन को पहुँच वा है।

### क्य-विक्य का आर्रा

वित्त-तो स्व-विषय का आहा। आए एक वामी राफ ताम भौता तिसा बास । ताकि विक्रम का प्रतिकार बढ़ का ११ । वस्तुओं का हुए हर बाने पर लाम के एक अर्थ का विराय क्षण के हर में मानन रास्य बान, वो उन समय काम आये। बार उम्मुओं का मान्य घर गहा हो । उन्तुर

सिपुड और नहें दो जाय और सबके ।तर दाम एक हो । नाचा-हो बस सार क्या साने दही है।

चिचा-भतीये ये बले करते हुए जिस समय पुम कर तीट रहे थे उस हिन्द सन्धन भी उधर में अर निर्देश

नीहन मोपने लगा-मनुष्य पुरु भग रोग है। बीन बानना या

कि एक अनाम बालक एक दिन दिना बढ़ा आपनी यन बामगा।

# कहानी-परिचय

#### आत्माराम

शी प्रेमचन्द्र जी की सर्वोत्तम क्हानियों में जात्माराम एक है। बेडी भाम का पहुनेवाला मुनार महादेव अपने तीते की बहुत बाहुता है। और सबोबाम तोने को पहड़ने जाने की दौड़ में उने अपरियो ना हुआ मिछ जा मा है। इस धन की प्राप्ति से उनका मन ही बदल जाता है और वह धर्म की ओर उन्मुख हो जाता है। उस धन से उसने पुष्प कार्य निये और आज

भी वेदो में उसकी कीर्ति गाई जाती है। प्रेमकर की की पहानियों की भाषा पहानी के लिये सभी गुणों से सुपत

समका जाता है।

है। गर्वमुख्य होने के साथ उसमें जो एक बात सबसे विधेष है यह मुद्रावियों का प्रयोग है। हिन्दी साहित्य में इनने सन्दर दय से महाविरो का प्रयोग करने वाला अन्य कोई भी नहीं है । इनकी अनेक बहानियों के नमान मह कहानी भी ग्रामीण वाताबरण को लेकर हैं। चरित्र वित्रण भी दृष्टि में भी प्रेमचन्द जी कहानी ठेपको में सबने बड़कर है।

महादेव का चित्रण वहा स्वाभाविक हुआ है। गांव के सुतारो में आज मी अनेक ऐमे दिखेंगे जिनमें महादेव के पूर्व जीवन से पूर्व साम्य दिखेगा । चैसे अर्थ पिशान आज भी गांवों में है जिनवा पान नाम छेना अपराज्त

धन मिलने पर उसमें होने वाला पश्चिमेन भी स्वाभाविक ही है। . रोचकता इस कहानी में बहुत है। श्रारम्भ करने पर समाप्ति में पूर्व

छाड पाना सभव नहीं। महाविनेदार भाषा के साथ यह कहानी गाँगी

के जीवन की एक कांकों भी प्रस्तृत करती है।



240

17 £ 1

कुमूमल का कटपूनली की तरह नाचत न देख मस्ते ये और समय बुसमव क्षमा राज्य वे । महरमान के हरते ही स्वासी माथियों की यन आई । धन पानी नी

तरह बहाया जाने लगा । स्थापार की आर ने उदासीनना दिलागई बान क्यों । फल्स्वरूप जब एक दिन एक हुग्दी के भगवान की बार आई ना जान हुआ कि रूपया नहीं है। यही दोड़ पूप हुई पर गढ़ स्वर्थ । अन्त में महरमान ब्लायं गर्म । उन्हानं अपनी अनुराई में यह बला दूर कर दी । इसके प्रवास अपने धर चरेर गर्ने ।

अब बुद्रमल को महध्यल मुनीन का मुख्य झात हुआ। उन्हार्त प्रग प्रयत्न किया कि व और आर्थ और अपने पुराने कार्य को संभात । पर तीर हाय न बाहर जा चका था। भटनमध्य किमी प्रकार नैयार न हथ और बुजुस र की हाथ मन्द्रवर रहना प्रदाः।

भाषा सर्वसम्बद्ध कथोपथन प्रणाली सुन्दर, कहानी विज्ञासाहुणे तथा मनारत्रक है। विभी ताम के करने में जल्दी न करनी पार्टिये और बहुत साथ समक्रकर मूंड से बाप निवालनी बाहिये। अंग्रिस बाना का स्थान नहीं रायने उनकी नहीं दशा होती है जो भूत्रमण

## अस्यामन

को बन्दायन लाख ही यमों को यह कहानी पुरान अविद्या की जान का एक कोई। प्रमान करती है ।

रक्रम मार्च का कमार्ट है। यावा के हिन्दू कमार्ट का वरी प्रा की दोच्ट व देखने है। उस काई अपने यूगी ग्रमने मन नहीं देखा। यह आसी रामात्र कुमी का लक्षर राम दिशान तर्रत के सहने और क्यारिमान क्षेत्र काल राज्य केरण गाँध के राक्षण के बाहरण गां। काल गांग । काली



उल्हुमों की पोल कभी न कभी खुलती ही है। पलट्रराम की भी पोल जुली भाषण लिखा हुआ पढ सकता उनकी सामर्थ के बाहर जा जन वह छनान गया । परन्तु मुद्रभालय की भूल में 'भ' की जगह 'म' छप गया । और जर वहीं 'भ' की जनह से 'म' भी पण्डरगम जी सभापति ने पढ़ना भारम्य किया तो हुँसी के फीवारे छूटने प्रारम्भ हो असे । और सभापति जी र मह लटका कर नीचे उतरने पर बाध्य होना एडा ।

भी कृष्णदेव प्रसाद जो गोड 'बेडव' हास्यरम के मफल लेखक हैं। उनको इस बहानों में भी हास्य सर्वत्र वर्तमान है। हास्य रस की वहानियो ना हिन्दी मोहित्य में बड़ा अभाव है। बेडब जी का इस क्षेत्र में काय प्रश-भनीय है।

#### परिवर्तन

थी बरुणापनि जी जिपाठी द्वारा जिलित यह बहानी भारतीय सस्टर्ति व्यक्त करनेवाली है। प्राचीन भारत में स्वाभिमान की मात्रा अत्यक्षिक भी। हार और जात क्षणिक न होते थे। एक बार हार बादे पर पीडी दर पोड़ी बदने को भावना बनी रहती थी। और जब तक बदला चुका न लिया जाना वह ऋण के समान भार बना रहता । इस क्ट्रानी में वह अनीत संजीव

भद्रदल और उसका पुत्र राजाला में साम्बीर में आब हुए दस्पति म शास्त्राथ करते ह और नाम्मीर की विद्यी द्वारा मम्मोहित होकर उन्हें ार माननी पत्नी है। उमी व कारण भेरदल को फीमी लग्नाकर सरने में दिए बान्स परता है। दिना को साथ का क्षारण बानन पर पुत्र बदन्ता उन पर कटिबंद होते. हे औं। रोजिय उन बानो है। उसकी नपस्या सफल राना ह प्राप्त कडमार कर .स. सार का राग्य काएगीरक के हाथ संश्रीत के

िर् आश्राता है। जिस करने के जिए उसमें उनमा प्रयत्न किया जिसे तरस्या की यही बन मजन होने का समय आया तो एक नर्र बात हो यही हह प्रकार से पुत्र क्या में असमय होने पर उस नारी ने अपने हड़य है हुस्टे को बायांतिक के कारों में जान दिया। ईयों से दाय हड़य को इस न्यों के आत्मनमर्थन में गीनत बना दिया और कार्यांतिक बस्से को इस में कार्यांकर मोहहरी नेत्रों ने देखने नदा।

रहानी में रोवरता है जिल्लामा सबंद बर्गमान है। भाषा मंस्ट्रनसिष्ठ

बोर कोमल है।

٠.

2

# ब्रे!बे!

नाइकोच मैंतो में किसी हुई यह कहानी बदना एक विशेष स्थान उपनी है। वर्षन मैंनी बड़ी प्रभावतानी है। यो में बोनो भाषा में बूने को कहते है। नाम में और कहानी में डो मध्य है कर अन्त दक बाद नहीं होता और इनी कारण पाइक के मन में विद्याना बनी एनती है।

----

्राच्या का प्रदेश स्था । । वर्ष तका क्षेत्रस्था के स

यत्य-सञ्चय भाषा नरल तथा कहानी के बोस्य है। वर्णत के प्रभावसाठी द्वप ने कहानी को सजीव बना दिया है।

# दावा

मुओ उमा हुमारो द्वारा विवित्त यह कहानी वर्गना मक ग्रंकी की हैं। डोवा विष्यमी लामा शस्यम की एवनाय कन्या है । तथागत की पूजा के परचान् उठन पर जब उमें ज्ञात होता है कि गुस्तवर होने का अपराध लगाकर सारिपुत्र का मृत्यु दण्ड दिया जाने को है तो उनकी जीवन स्कार के लिए वह चल पड़नों हैं। मार्च के अनेक विष्न वाधाओं को लौपनी हुई वह सारिपुत्र के पास पत्रुंचनी और उन्हें हटाने का उपत्रम करती है।

सारिपुत पहुँठे तो इस पर नैयार नहीं होते पर अन्त में मान जाते हैं और वह स्थान छाड़ देत हैं। गुप्तवर को भागने में सहायना देने के अपराप में पिता पूजी दण्ड के माना होते हैं।

बहानी में भाषा की सरलेता तथा धारा प्रावाहिकता है। सारिपुत की बांबनरभा के लिए हावा का त्याग प्रशसनीय है।

मूली ऊपर सेज पिया की मूं हो उपर सब विया का थी रह जी की नवीत रचता है। काणों के अतीन बैभव की गायाय कासी के वृक्षों के मख से आब भी मुनी जाती है। उन्हों में से यह भी एक है। परन्तु रह की की कथन प्रणाली ने अनीत की बर्धमान म ला कड़ा किया है। पाठक पढ़ने समय भूल जाता है कि वह प्रहानी पड़ रहा है। भिज़्क का मुख-दुख उमका जपना हो जाता है। यह कहानी न तल्लीन हो पदता है।

उस बमाने में जिस गण्डा करा जाता था। जिसस सरकार परेग्रात वा आर जिसको पंकडन के रिया परिसोधिक की पालमा हो नुकी थी।



न भारत हो है स्वरूप प्राप्तिक नहीं गाएक वार्य भी विकास प्राप्त और विकास में नाथा वे अहर किस्तुरन रेखक की मुक्तकता उससी होते के सन्दर्भ कर को ही देखन से बात होती है किसी बात के देखन से नहीं स

रहाना हो पूपरी स्थितना उसन निहित राक्त से है। यह कहानी इसने राज्य है कि पहन के छित्र प्रारम्भ करने बाराजिना पमाप्त किय इस छाउ नहीं सहता।

क गती तभी पण्ड जाना जा महना है जब उपका गहरू गांदक गरं हो जन्म पढ़ किया जान मुख्य रचन कर जाक ने दिया । "उपने कर करार के जी गांची उपनी हैं, ''यह के वार्ष के देश के उस उपने कर जान जा जो र गांगी उपनी हैं, ''यह के वार्ष के देश के इस है। ''इ के इस है। ''ह के

#### कवरीक्रव का मार्च

हर बराबी और बराबिहर के एक (हराबच प्रमुख) है। मार्टिय में मनक प्रियोग पर पर बराबार का का पर्यक्र हूं है। मार्चिय पर बराविया पर का प्रकार का का का मार्चिय पर मार्चिय पर बराविया पर पर का प्रकार का प्रकार मार्चिय

4.5

. ...

